केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 191 मंगलवार 4 फरवरी 2025 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

चित्रांश क्लब महिला विंग ने मनाया बसंत पंचमी का उत्सव

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर चित्रांश क्लब महिला विंग की संरक्षिका रेखा चित्रगुप्त के आवास पर जिलाध्यक्ष लक्ष्मी अरोरा द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन के साथ मासिक बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में चित्रांश क्लब की संरक्षिका रेखा चित्रगुप्त ने बसंत पंचमी खास है क्योंकि यह दिन देवी सरस्वती के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है,इसे ज्ञान, संगीत और कला के क्षेत्र में सफलता प्राप्ति का दिन माना जाता है। इसके अलावा, यह दिन वसंत ऋतु की शुरुआत का प्रतीक होता है, जब प्रकृति नई ऊर्जा और जीवन से भरपूर होती है।

क्लब जिलाध्यक्ष लक्ष्मी अरोरा ने संगठन के कार्यों पर विस्तार से चर्चा किया और कहा कि संगठन लोगों का एक समूह है जो निर्दिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करता है । अध्यक्ष संगठनात्मक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लोगों और गतिविधियों को समूहीकृत करने, अधिकार और जिम्मेदारी स्थापित करने और लोगों के साथ बातचीत करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

बसंत पंचमी के अवसर पर प्रमुख रूप से संध्या दीक्षित,नीलम सिंह,किरन पांडेय शीला पाठक,संज्ञा श्रीवास्तव,सुमन श्रीवास्तव,सविता श्रीवास्तव,रूमी बाधवा,ममता श्रीवास्तव,संध्या पांडेय,संगीता ढींगरा, सहित अन्य लोग मौजूद रही।

बस्ती में पेट्रोलियम मिलने की संभावना: सर्वे शुरू

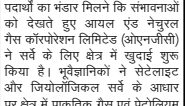

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। । सरयू और मनवर नदी के दोआबा क्षेत्र में तेल और प्राकृतिक गैस कि तलाश के लिए ओएनजीसी ने सर्वे शुरू किया है। गंगा बेसिन क्षेत्र में सरयू और मनवर नदी का दोआबा आता है। यहां पर पेट्रोलियम पदार्थों का भंडार मिलने कि संभावनाओं को देखते हुए आयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड (ओएनजीसी) ने सर्वे के लिए क्षेत्र में खुदाई शुरू किया है। भूवैज्ञानिकों ने सेटेलाइट और जियोलॉजिकल सर्वे के आधार पर क्षेत्र में प्राकृतिक गैस एवं पेट्रोलियम कि सम्भावना जताई है। इसके लिए जमीन में 20 मीटर तक ड्रिलिंग कर पता लगाया जा रहा है।

दुबौलिया ब्लॉक क्षेत्र के पकड़ी चौहान में गांव के पास तेल और प्राकृतिक गैस भंडार की तलाश में ओएनजीसी की टीम ने जमीन मे जगह–जगह ड्रिलिंग कर सर्वे किया। मौके पर मौजूद कर्मचारियों ने बताया कि गंगा बेसिन क्षेत्र में प्राकृतिक गैस और तेलध की सम्भावना के लिए भी सर्वे किया जा रहा है। घ्सर्वे में दो दर्जन से अधिक मजदूरों ने मशीन से जमीन में 20 मीटर की गहराई में खुदाई कर निर्धारित प्रक्रिया पूरा कर जांच कर रहे हैं। प्रक्रिया के तहत 20 मीटर नीचे विस्फोट किया जा रहा है। उससे निकलने वाली तरंगों को मशीन से सेंसर किया जा रहा है। सेंसर का डाटा परीक्षण के लिए ओएनजीसी को भेजा जा रहा है।

दुबौलिया क्षेत्र के पायकापुर, गुलौरी, विसुनपुरा सहित अन्य गांवों में सर्वे कार्य किया जा रहा है। ओएनजीसी के कर्मचारियों ने बताया इस के लिए डीएम से अनुमति ली गई है। क्षेत्र में प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम कि सम्भावना है। सर्वे टीम ने बताया कि अभी आगे भी ड्रिलिंग की जायेगी। इस दोआबा क्षेत्र में प्राकृतिक गैस या तेल मिलता है तो अति पिछड़े क्षेत्र की सूरत बदल जाएगी।

संगम में लगायी श्रद्धा की डुबकी

प्रयागराज (आभा)। वसंत पंचमी के अमृत स्नान पर श्रद्धालुओं, साधु–संतों और महामंडलेश्वरों ने संगम में पवित्र डुबकी लगाई और स्नान के बाद दान–पुण्य किया। महाकुंभ के तीसरे अमृत स्नान पर नागा संन्यासियों के साथ देश–विदेश के करोड़ों श्रद्धालु भी साक्षी बने।

वसंत पंचमी के अमृत स्नान पर हर–हर गंगे, बम बम भोले और जय श्री राम के गगनभेदी उद्घोष से महाकुंभ क्षेत्र गूंज उठा । महाकुंभ के तीसरे और आखिरी अमृत स्नान पर्व पर अखाड़ों ने संगम में डुबकी लगाई। भोर में साढ़े चार बजे सबसे पहले महानिर्वाणी के संतों ने त्रिवेणी में स्नान किया। इसके बाद पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी और फिर श्री पंच दशनाम जूना अखाड़े ने अमृत स्नान किया। जूना अखाड़े में नागाओं की भारी फौज रही। जूना अखाड़े में किन्नर अखाड़ा भी शामिल रहा।

महाकुंभ के तीसरे और अंतिम अमृत स्नान पर्व वसंत पंचमी पर संगम में पुण्य की डुबकी लगाने के लिए लोगों का रेला उमड़ा। चाहे लाल मार्ग हो या काली मार्ग या फिर त्रिवेणी मार्ग। हर तरफ से भक्ति का सागर संगम में मिलने के लिए उमड़ रहा है। मौनी अमावस्या स्नान पर्व हादसे से सबक लेते हुए इस बार अमृत स्नान के लिए अखाड़ों के लिए सेफ कॉरिडोर बनाया गया था ताकि शाही सवारियां निकलने के दौरान उस रास्ते पर कोई आम श्रद्धालु प्रवेश न कर सकें। बसंत पंचमी का स्नान सकुशल सम्पन्न होने पर प्रशासन ने राहत की सांस लिया है। चप्पे–चप्पे पर सुरक्षा के कडे प्रबन्ध किये गये थे।

बस्ती में होगा विशाल बौद्ध धम्म महासम्मेलन तैयारी बैठक में दिया बुद्ध का संदेश

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । बस्ती जनपद में विशाल बौद्ध धम्म महासम्मेलन कराये जाने के उद्देश्य से एक तैयारी बैठक मालवीय रोड स्थित एक मैरेज हाल में भिक्खु चन्दिमा थेरो अध्यक्ष और संस्थापक धम्मा लर्निंग सेन्टर सारनाथ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। भिक्खु चन्दिमा थेरो ने कहा कि महात्मा बुध का संदेश समूची दुनियां में शांति, प्रेम और प्रगति का संदेश दे रहा है। बुद्ध ने सदैव लोगों को स्वंय जाग्रत होकर 'अप्प दीपो भव' का संदेश दिया। इस मूल संदेश से जनपद को जोड़ने के लिये बौद्ध धम्म महासम्मेलन सबके सहयोग से मार्च माह में कराया जाना मण्डल मुख्यालय पर प्रस्तावित है।

कार्यक्रम में भिक्खु चन्दिमा थेरो ने महात्मा बुद्ध के संदेशों से लोगों से जोड़ा। कहा कि उनके संदेश को अनुयायी गांव– गांव जाकर पहुंचायेंगे जिससे बौद्ध धम्म महासम्मेलन में बड़ी संख्या में उपस्थित होकर लोग बुद्धत्व के महत्व को अंगीकार करें।

तैयारी बैठक में मुख्य रूप से उदयभान, पूर्व सांसद लालमणि प्रसाद, डा. विनोद कुमार, विश्म्भरनाथ एडवोकेट, डा. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. राजेन्द्र बौद्ध, शिवराम कन्नौजिया, आर.के. बाबू, तिलकराम, श्रीमती सरोज गौतम, राम जियावन बौद्ध, अमरनाथ गौतम, राम अनुज भाष्कर, शशिकान्त गौतम, बनवारीलाल कन्नौजिया, रमेश चन्द्र गौतम, अजय राज, जानकी प्रसाद राव, राम प्रसाद आर्य, राजेश पासवान, सुजीत कुमार चौधरी, डा. फूलचन्द, नीरज वर्मा, रामशंकर निराला, विश्राम राव, मक्खन लाल मास्टर आदि उपस्थित रहे।

परिषदीय विद्यालय में मां सरस्वती प्रतिमा का लोकार्पण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बसंत पंचमी के अवसर पर सोमवार को बस्ती सदर विकास खण्ड के परिषदीय विद्यालय जामडीह शुक्ल में ज्ञान की देवी मां सरस्वती की प्रतिमा स्थापना विधि विधान से वैदिक मंत्रों के बीच किया गया।

ग्राम प्रधान शान्ति शुक्ला ने मां सरस्वती प्रतिमा का लोकार्पण करते हुये कहा कि इससे विद्यालय के छात्रों को प्रतिदिन प्रेरणा मिलेगी। कार्यक्रम संयोजक प्रिन्स शुक्ल ने कहा कि 5 दशक पुराने विद्यालय में मां सरस्वती प्रतिमा की स्थपना गौरव की बात है। इंचार्ज प्रधानाचार्य वन्दना पाण्डेय ने इस अवसर पर छात्रों को बसंत पंचमी के महत्व से परिचित कराया। छात्रों ने बसंत पंचमी के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर मन मोह लिया।

दुर्गेश कुमार मिश्र की स्मृति में पुरस्कृत हुये मेधावी:सृष्टि का पौराणिक सिद्धान्त' निबन्ध संग्रह का लोकार्पण: सम्मानित हुईं विभूतियां

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । दुर्गेश कुमार मिश्र सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थान द्वारा साहित्यिक संगोष्ठी, राष्ट्रीय कवि सम्मेलन और सारस्वत सम्मान समारोह का आयोजन प्रेस क्लब सभागार में वरिष्ठ कवि डा. राधेश्याम बंधु की अध्यक्षता और डा. रामकृष्ण लाल जगमग के संयोजन एवं संचालन में किया गया। इस अवसर पर संस्थाध्यक्ष डॉ. त्रिभुवन प्रसाद मिश्र द्वारा इंजीनियर दीपक कुमार मिश्र के सौजन्य से 25 पुस्तकों की प्रणेता प्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर डॉ0 रेशमी पाण्डा मुखर्जी कोलकाता को अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह, सम्मान पत्र, श्रीफल एवं 11 हजार रूपये का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसी कम में 6 चयनित मेधावी छात्र–छात्राओं को दुर्गेश कुमार मिश्र की स्मृति में दो–दो हजार रूपये का पुरस्कार और प्रमाण–पत्र, स्मृति चिन्ह देकर उत्साहवर्धन किया गया। इसी कड़ी में डॉ. त्रिभुवन प्रसाद मिश्र कृत ' सृष्टि का पौराणिक सिद्धान्त' निबन्ध संग्रह का लोकार्पण किया गया।

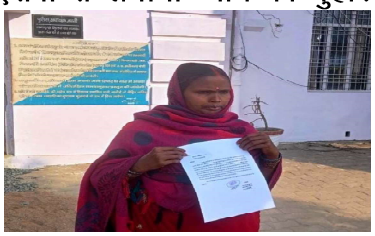

मुख्य अतिथि डॉ0 रेशमी पाण्डा मुखर्जी ने कहा कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, डा. लक्ष्मीनारायण की धरती पर उन्हें जो सम्मान मिला उससे अभिभूत हूं। कहा कि एक साहित्यकार की भूमिका कभी समाप्त नहीं होती। वह जीवन की जीजिविषा में भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। समाज निर्माण और वैचारिक चेतना, मानवीय संवेदना को बचाये बनाये रखने में साहित्यकारों की सदैव अग्रणी भूमिका रही है। युगीन रचनाकार इस दिशा में निरन्तर गतिमान हैं और अपने समय के सत्य को शव्द दे रहे हैं। कहा कि साहित्य और साहित्यकार सरहदों के परे मनुष्यता को जीवंत करते हैं। उनकी प्रकृति पर केन्द्रित रचना सराही गई।

कवि सम्मेलन: मेरे बाद मेरी किताबें रहेंगी

दिल्ली से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार डा. राधेश्याम बंधु ने कहा कि साहित्यकार को सम्मान नवीन ऊर्जा देते है, इससे उसे समाज के प्रति और बेहतर करने का उल्लास बढता है। कहा कि दुर्गेश कुमार मिश्र स्मृति सम्मान की परम्परा निश्चित रूप से एक बड़ी उपलब्धि है। उनकी रचना ' आदमी कुछ भी नहीं फिर भी वतन की शान है, एक अंधेरी झोपड़ी का वह स्वयं दिनमान है, जब पसीने की कलम से वक्त खुद गीता लिखे, एक ग्वाला भी स्वयं बनता कभी भगवान है' के द्वारा कार्यक्रम को ऊंचाई दी।

साहित्य भूषण हरीलाल मिलन ने कहा कि साहित्यकार अपने समय के सत्य का सटीक पारखी है। वह भविष्य दृष्टा भी है। उनकी रचना ' कभी सुख, कभी दु:ख के किस्से कहेंगे, गजल गीत दोहों की नदियां बहेंगी, मुझे याद करता रहेगा जमाना, मेरे बाद मेरी किताबें रहेंगी' को श्रोताओं ने सराहा।

संस्थान के अध्यक्ष डा. त्रिभुवन प्रसाद मिश्र ने कहा कि विदुषी डॉ0 रेशमी पाण्डा मुखर्जी को सम्मानित कर संस्थान स्वयं गौरवान्वित है। इससे और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। दुर्गेश कुमार मिश्र की स्मृति में जो सम्मान कवि साहित्यकार एवं चयनित छात्रों को दिया जाता है उसके मूल उद्देश्य में सद्भावना और संकल्प निहित है।

संचालन करते हुये वरिष्ठ कवि डा. रामकृष्णलाल जगमग ने कहा कि बस्ती की धरती पर अनेक स्वनामधन्य रचनाकारों का आगमन हुआ है। डॉ0 रेशमी पाण्डा मुखर्जी का बस्ती की धरती पर आगमन साहित्य के दो प्रमुख धाराओं के मिलन विन्दु जैसा है। प्रेस क्लब अध्यक्ष विनोद कुमार उपाध्याय ने कहा कि स्मृतियों को आयोजन से जोड़ना बड़ी उपलब्धि है।

इस अवसर पर दुर्गेश कुमार मिश्र की स्मृति में डॉ. हरीलाल मिलन, डा. राधेश्याम 'बंधु' डा. ओम प्रकाश वर्मा 'ओम' ज्ञानेन्द्र द्विवेदी 'दीपक' डा. हेमा पाण्डेय, डा. रामकृष्ण लाल 'जगमग', विनोद उपाध्याय, हरीराम बंसल, श्याम प्रकाश शर्मा, डा. वी.के. वर्मा, सर्वेश कुमार श्रीवास्तव, डा. कृष्ण प्रसाद मिश्र, दीपक सिंह प्रेमी, रागिनी गुप्ता, सौम्येन्द्र कुमार पाण्डा, स्कन्द कुमार शुक्ल आदि को अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह, सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में निराला साहित्य एवं संस्थान द्वारा डा. त्रिभुवन प्रसाद मिश्र को उनके साहित्यिक योगदान के लिये सम्मानित किया गया।

अर्चना श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत मां सरस्वती की वंदना से आरम्भ कवि सम्मेलन में अनेक कवियों ने काव्य पाठ किया। सतीश आर्य की रचना ' जब–जब अपराधिनी सिया को तजते हैं राम, तब–तब पनाह देती है एक झोपडी' के द्वारा विसंगति को स्वर दिया। महेश प्रताप श्रीवास्तव ने कुछ यूं कहा– 'महफिल में उन्हें देखकर दिल धक्क से हुआ' ने नयी ऊंचाई दी। डा. ज्ञानेन्द्र द्विवेदी के शेर ' छोडिये गुरू द्रोण की, एकलव्य की आइये बातें करें मनत्व्य की' के द्वारा समय को स्वर दिया। विनोद उपाध्याय की रचना ' हमारी याद में आंसू बहा रहा है कोई, नजर से दूर है लेकिन बुला रहा है कोई' को सराहना मिली। ओज के समर्थ कवि डा. ओम प्रकाश वर्मा 'ओम' की ओजस्वी कविताओं ने मंच को ऊंचाई प्रदान किया। डॉ. राम कृष्ण लाल जगमग ने जहां हास्य व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से लोगों को हंसाया वहीं गंभीर रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं को सोचने पर बाध्य किया ' जो भी हो पर सत्य कहूंगा, झरना जैसा सदा बहूंगा, इन्ही किताबों के बल पर मैं मरने पर भी अमर रहूंगा' इसे काफी सराहना मिली। डा. हेमा पाण्डेय ने प्रेम और ऋृंगार की रचनाओं ने मन मोह लिया। इसी कड़ी में अफजल हुसेन अफजल, अर्चना श्रीवास्तव, शाद अहमद 'शाद' पं. चन्द्रबली मिश्र, सागर 'गोरखपुरी' दीपक सिंह प्रेमी, रागिनी गुप्ता, हरिकेश प्रजापति, आदित्यराज, तौव्वाब अली, रहमान अली रहमान आदि ने वर्तमान संगति, विसंगतियों पर रचनायें प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से रामदत्त जोशी, त्रिपुरारी मिश्र, अमित मिश्र, बटुकनाथ शुक्ल, डा. दशरथ प्रसाद यादव, डा. कृष्ण प्रसाद मिश्र, हरिराम बंसल, बी.के. मिश्र, विभूति पाण्डेय, राकेश कुमार मिश्र, कुमार शैल सत्यार्थी, हरीराम पाण्डेय के साथ ही बड़ी संख्या में श्रोतागण उपस्थित रहे।

5 को महाकुंभ में आयेंगे पीएम मोदी

प्रयागराज (आभा)। महाकुंभ में स्नान के लिए बुधवार पांच फरवरी को प्रयागराज आ रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रोटोकॉल में बदलाव हो गया है। पीएम मोदी के कार्यक्रम को बेहद छोटा कर दिया गया है। पीएम मोदी अब केवल एक घंटा ही प्रयागराज में रहेंगे। इस दौरान वह केवल संगम स्नान और गंगा पूजन करेंगे। इसके अलावा पहले से तय किए गए सभी कार्यक्रम नहीं होंगे। प्रधानमंत्री के कार्यक्रम को देखते हुए उनकी टीम ने सोमवार को रिहर्सल भी किया। पीएम मोदी के आगमन से पहले मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी प्रयागहराज आ रहे हैं।

बंजर की जमीन को लेकर दबंगो ने दलित महिला को मारा पीटा: एसपी से लगाया न्याय की गुहार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । वाल्टरगंज थाना क्षेत्र की बेलहरा निवासिनी दलित महिला कंचना पत्नी चुल्हई ने एसपी को पत्र देकर न्याय की गुहार लगाया है। पत्र में कंचना ने कहा है कि उसके मकान के निकट गाटा संख्या 407 शासकीय भूमि है जो वंजर में दर्ज है। इस भूमि के खाली हिस्से पर गांव के ही सूर्य नरायन सिंह पुत्र तेज बहादुर सिंह, बालमुकुन्द सिंह जबरिया कब्जा कर लेना चाहते हैं। जब कंचना ने भूमि कब्जा करने से रोका तो सूर्य नरायन सिंह और बाल मुकुन्द सिंह नशे में धुत होकर पहुंचे और उसे जाति सूचक गालियां दीं और मारा पीटा। स्थानीय लोगों के हस्तक्षेप से कंचना की जान बची।

एसपी को दिये पत्र में कंचना ने कहा है कि वह अपने पति चुल्हई के साथ वाल्टरगंज थाने पर न्याय की गुहार लगाने पहुंची किन्तु उसे थाने से धमकी देकर भगा दिया गया। कंचना ने मांग किया है कि दोषियों के विरूद्ध मुकदमा पंजीकृत कर प्रभावी कार्रवाई और जमीन एवं उसके जान माल की रक्षा करायी जाय।

सेन्ट्रल एकेडमी में संकल्पो के साथ मनाया गया बसंत पंचमी का पर्व

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सेन्ट्रल एकेडमी में बसंत पंचमी का पर्व संकल्पों के साथ विधि विधान से ज्ञान की देवी मां सरस्वती का पूजन अर्चन, हवन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। निदेशक जय प्रकाश तिवारी और सीमा तिवारी ने छात्रों के साथ ज्ञान की देवी मां सरस्वती का पूजन किया। कहा कि ज्ञान के बिना सृष्टि में कोई सृजन संभव नहीं है। मां सरस्वती की जिस पर कृपा हो गयी उसे सृष्टि में सब कुछ इच्छित प्राप्त हो जाता है।

प्रधानाचार्य दीपिका तिवारी, सह निदेशक अनुज तिवारी ने कहा कि बसंत पंचमी ऋतु परिवर्तन के साथ ही मां सरस्वती के पूजन का दिन है। इससे हमें बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। बताया कि सरस्वती पूजन के साथ ही विद्यालय में नामांकन की प्रक्रिया आरम्भ हो गई है।

इस अवसर पर छात्र–छात्राओं वैष्णवी, शिप्रा, नम्रा, मानसी, चांदनी, रौनक, शिवाकान्त, सृष्टि, आदि श्री, खुशी, सचिन, हर्षित दूबे, फरहान, सर्वेश, शाश्वत, श्रेया, अलका, आराध्याय, कार्तिक दूबे आदि ने बसंत पंचमी पर केन्द्रित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर मन मोह लिया। मुख्य रूप से आबिद अरशद, द्विजेन्द्र, उन्नति, ऋचा, सुधा, साक्षी, दया, निखिल, हिमांशु, सुनीता, अरीबा आदि ने छात्रों को बसंत पंचमी के महत्व की जानकारी दिया।

डीएम, सीडीओ से मिले सफाईकर्मी द्वितीय एसीपी का लाभ दिलाने की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सोमवार को उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ जिलाध्यक्ष अजय कुमार आर्य के संयोजन में संघ पदाधिकारियों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने जिलाधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी के साथ ही जिला पंचायत राज अधिकारी रतन कुमार को मांग पत्र देकर समस्याओं के निस्तारण का आग्रह किया। प्रतिनिधि मण्डल ने उच्चाधिकारियों से आग्रह किया कि सफाई कर्मचारियों को द्वितीय एसीपी का लाभ दिलाया जाय।

मांग पत्र देने के बाद सफाई कर्मचारी संघ जिलाध्यक्ष अजय कुमार आर्य ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि जनपद के 16 वर्ष की सेवा पूर्ण करने वाले सफाई कर्मचारियों को नियमानुसार द्वितीय एसीपी का लाभ मिलना चाहिये, अन्य जनपदों में इसका लाभ मिल भी रहा है किन्तु जिला पंचायत राज अधिकारी रतन कुमार ने सफाई कर्मियों को द्वितीय एसीपी का लाभ दिलाये जाने से मौखिक रूप से मना कर दिया है। इससे सफाई कर्मियों में रोष है। मांग किया कि सम्बंधित सफाई कर्मियों को द्वितीय एसीपी का लाभ दिलाया जाय। अजय कुमार आर्य ने बताया कि डीएम और सीडियो ने प्रतिनिधि मण्डल को आश्वासन दिया है कि सफाई कर्मियों को द्वितीय एसीपी का लाभ दिलाया जायेगा।

प्रतिनिधि मण्डल में मुख्य रूप से संघ के जिला मंत्री मनोज चौहान, संगठन मंत्री राम कृपाल चौधरी, लेखा सम्प्रेक्षक अमित चक्रवर्ती, राजेश कुमार, शिवमंगल पाण्डेय शामिल रहे।

सरस्वती पूजन के साथ मनाया गया बसंत पंचमी का पर्व

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सोमवार को महर्षि विद्या मन्दिर में ज्ञान की देवी मां सरस्वती की विधि विधान से पूजन अर्चन के साथ बसंत पंचमी का पर्व संकल्पों के साथ मनाया गया । प्रधानाचार्य ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव ने छात्रों को बसंत पंचमी का महत्व बताते हुये कहा कि ऋतु परिवर्तन, उमंग का यह पर्व ज्ञान की देवी मां सरस्वती की प्रार्थना से आरम्भ होता है। कहा कि संसार में ज्ञान का कोई दूसरा विकल्प नही है।

मुख्य अतिथि अनीता श्रीवास्तवा ने छात्रों को मां सरस्वती के पूजा के महत्व और बसंत के प्रासंगिकता पर विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर विद्यालय के छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुतियां दी। 11 नये छात्रों का विद्या आरम्भ कराया गया। अतिथियों ने विविध कार्यक्रमों में हिस्सा लेने वाले छात्रों को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया। गुरू पूजन सहित अन्य कार्यक्रमों में शिक्षिका सुनीता सिंह, श्रीमती रागिनी श्रीवास्तवा ने योगदान दिया। संचालन वरिष्ठ अध्यापक दीनानाथ सिंह ने किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अंशू त्रिपाठी , मेध्या , नव्या , अंशिका , आदर्श , प्रखर , प्रांजल , आदि छात्र छात्राओ ने प्रतिभाग किया। विद्यालय के समस्त शिक्षक, अमित श्रीवास्तव मंजूलता, अमित कुमार, ,सरिता , मधू , वैशाली , स्वाती, प्रियंका , मीना, राम सागर, लेखाकार अशोक कुमार आदि शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 4 फरवरी 2025 मंगलवार

सम्पादकीय

चुनावी रण में दिल्ली

चुनावी राजनीति का खेल भी अजीब है। दो दावेदारों के बीच सत्ता की जंग में हार—जीत का फैसला कई बार तीसरे खिलाड़ी के खेल पर निर्भर करता है। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी वैसा ही समीकरण बनता दिख रहा है। दिल्ली अधूरा राज्य है, जिसकी सत्ता के कुछ निर्णायक सूत्र उपराज्यपाल के जरिये केंद्र सरकार के हाथ में रहते हैं। फिर भी अधूरे राज्य की सत्ता की जंग पूरे जोर—शोर से लड़ी जा रही है। इस जंग में चुनावी वादों से लेकर दलगत और निजी आरोप—प्रत्यारोप तक के इस्तेमाल को कोई परहेज नहीं दिख रहा। आप दस साल से दिल्ली की सत्ता पर काबिज है तो 70 सदस्यों वाली विधानसभा में मात्र आठ सीटों के साथ भाजपा मुख्य विपक्षी दल है। सत्ता की जंग इन दोनों के बीच ही मानी जा रही है, फिर भी कांग्रेस चुनावी जंग को त्रिकोणीय बनाती दिख रही है।

पहले जनसंघ और फिर भाजपा ही दिल्ली की राजनीति में कांग्रेस के अलावा दूसरी बड़ी खिलाड़ी रही। परिदृश्य बदला 2013 के विधानसभा चुनाव में। तत्कालीन संप्रग सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोपों के मद्देनजर जन लोकपाल की मांग को लेकर अन्ना हजारे के चर्चित आंदोलन के बाद उन्हीं के कुछ शिष्यों द्वारा अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में बनाई गई आम आदमी पार्टी यानी आप पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ी और 15 साल से सत्तारूढ़ कांग्रेस को तीसरे नंबर पर धकेल कर 28 सीटों के साथ दूसरा बड़ा दल बन गई। सबसे बड़ा दल भाजपा थी 31 सीटों के साथ, पर उसे सत्ता से रोकने की खातिर कांग्रेस ने उसी आप की सरकार अपने समर्थन से बनवा दी, जिसने उसे अर्श से फर्श पर पटक दिया था। क्या कांग्रेस का वह फैसला दिल्ली में आत्मघाती साबित हुआ? इस सवाल के जवाब में उसकी संभावित चुनावी भूमिका का संकेत भी छिपा है। इसे समझने के लिए 2013 और उसके बाद के विधानसभा चुनावों में इन तीनों राजनीतिक दलों को मिले मतों का प्रतिशत जानना और उसे समझना जरूरी है।

अपने पहले ही विधानसभा चुनाव में 2013 में जब आप ने 29 प्रतिशत मत हासिल करते हुए 28 सीटें जीती थीं, तब भी कांग्रेस को 24.5 प्रतिशत मत मिले थे। हालांकि कांग्रेस मात्र आठ सीटें जीत पाई थी, लेकिन आप द्वारा सेंधमारी के बावजूद उसके पास सम्मानजनक मत प्रतिशत था। उसी चुनाव में 33. 1 प्रतिशत मत लेकर भाजपा 31 सीटों के साथ विधानसभा में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी। दिल्ली की राजनीति में बड़ा उलटफेर उसके बाद हुए विधानसभा चुनावों में हुआ, जिनमें कांग्रेस का मत प्रतिशत लगातार गिरता गया और उसके साथ ही आप का ग्राफ चढ़ता गया।

यदि फरवरी, 2015 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का मत प्रतिशत 24.5 से गिर कर 9.7 प्रतिशत रह गया तो उसे 2013 में अपने समर्थन से आप की सरकार बनवाने के अलावा किस राजनीतिक भूल का परिणाम माना जा सकता है? 2015 के विधानसभा चुनाव में आप का मत प्रतिशत 29 से छलांग लगाकर 54.6 प्रतिशत पर पहुंच गया। दरअसल, आप ने कांग्रेस से उसका परंपरागत वोट बैंक गरीब, दलित और अल्पसंख्यक छीनते हुए भाजपा के मिडिल क्लास वोट बैंक में भी सेंध लगाई। भाजपा का मत प्रतिशत 33.1 से गिर 32.2 प्रतिशत पर आ गया। इसका अंतिम चुनावी परिणाम यह निकला कि 28 सीटों वाली आप ने 67 सीटों के साथ इतिहास रच दिया तो 31 सीटों के साथ पिछली विधानसभा में सबसे बड़ा दल रही भाजपा तीन सीटों पर सिमट गई, जबकि कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला।

2020 के चुनाव में भी आप की कमोबेश वैसी ही चुनावी सफलता ने उसके पंखों को इतनी ऊंची उड़ान दे दी कि वह 2022 में पंजाब में भी सत्तारूढ़ हो गई तथा गुजरात और गोवा में मिले मत प्रतिशत और सीटों के बल पर राष्ट्रीय दल का दर्जा पा गई। 2020 के विधानसभा चुनाव में भाजपा द्वारा अपना मत प्रतिशत 32.2 प्रतिशत से बढ़ा कर 38.5 तक ले जाने के बावजूद आप का 62 सीटें जीत जाना चौंकाने वाला रहा। बेशक सीटें भाजपा की भी तीन से बढ़ कर आठ हो गईं, पर कांग्रेस का मत प्रतिशत और भी आधा रह जाने के चलते आप अपने मत प्रतिशत में एक प्रतिशत की गिरावट के बावजूद लगातार दूसरी बार प्रचंड बहुमत पाने में सफल रही। कांग्रेस का मत प्रतिशत 9.7 से गिर कर 4.3 रह गया, जबकि आप का मत प्रतिशत 54. 6 से गिर कर 53.6 प्रतिशत हो गया। इसलिए यदि पांच फरवरी को होने जा रहे चुनाव में भाजपा पिछली बार की तरह इस बार भी अपना मत प्रतिशत चार या पांच प्रतिशत बढ़ाने में कामयाब हो जाती है, तब भी वह आप को बहुमत पाने से नहीं रोक पाएगी, क्योंकि इसके बावजूद आप 47—48 प्रतिशत मतों के साथ भाजपा से आगे रहेगी।

ऐसे में आप का विजय रथ दिल्ली में तभी रुक सकता है, जब कांग्रेस अपना मत प्रतिशत 4.3 से बढ़ा कर तीन गुणा तक ले जाए। अगर कांग्रेस अपना खोया हुआ जनाधार वापस पा ले तो आप का मत प्रतिशत गिर कर भाजपा के संभावित मत प्रतिशत से भी नीचे जा सकता है और दिल्ली में सत्ता की बाजी पलट सकती है। इस तरह त्रिकोणीय मुकाबले में सबसे कमजोर होते हुए भी सत्ता की जंग में निर्णायक भूमिका कांग्रेस निभा सकती है। अगर 27 साल बाद दिल्ली में सत्ता का कमल खिला तो उसमें अप्रत्यक्ष भूमिका हाथ की भी रहेगी।

राम भरोसे चल रही यूपी की व्यवस्था

—ज्योति मल्होत्रा—

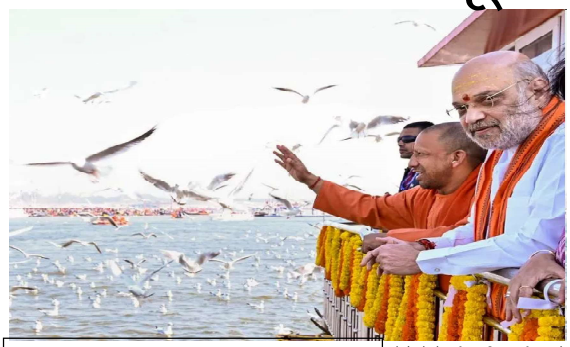

कुंभ में भगदड़ के चलते हुई श्रद्धालुओं की दुखद मौतों के मामले में जवाबदेही तय करने की मांग को लेकर विपक्ष प्रभावी नजर नहीं आया। इंतजामों को लेकर सवाल उठाये लेकिन वे बयानबाजी भर रहे। दरअसल, उत्तर प्रदेश में गंभीर सियासी विकल्प का अभाव है। जहां तक प्रयागराज में स्थितियों की बात है, यहां विपक्ष के लिए एक सबक भी है।

जो राख से राख, धूल से धूल। उतनी ही भक्ति, निराशा, हताशा, क्रोध३ और तो और संतुष्टि तक को भी खुद में समा ले, सबसे बढ़कर है उसकी पिछले कुछ सहस्राब्दियों से जारी तिरस्कार को सहन करने की शक्ति। और इसीलिए, इस सप्ताह की शुरुआत में प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ में पवित्र मौनी अमावस्या की रात को गंगा ने 31 और शवों को जज्ब कर लिया दृ बगल के गांव झूसी में भी सात अन्य शवों को दृ एक दिन पहले हुई यह भगदड़ हालांकि बहुत छोटी थी। जहां पर कई करोड़ लोग शरीर और आत्मा की शुद्धि के लिए ठीक एक ही समय पर संगम में पवित्र डुबकी लगाएं, वहां 38 जिंदगियां कहां गिनती में।

योगी आदित्यनाथ ने अभी भी मृतकों की उस गिनती की पुष्टि नहीं की है जो उनकी पुलिस बता रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने शोक संतप्त परिवारों को दिलासा दिया है। विश्व हिंदू परिषद के वैश्विक प्रमुख आलोक कुमार का कहना है कि इसमें भी 'प्रभु की इच्छा' है। समस्या यह है कि विश्व हिंदू परिषद का नेता सही है। पिछले कुछ दिनों से गंगा किनारे के आश्रमों और अखाड़ों में तीर्थयात्रियों की मौत पर भले ही गहरा दुःख पसरा हो, लेकिन कुल मिलाकर यह भावना अभी भी प्रबल है 'चलो, हो गया। था तो भयानक, लेकिन फिर यह कुंभ है। वह भी कोई साधारण नहीं, बल्कि महाकुंभ। जब लाखों श्रद्धालु एक साथ इतनी छोटी—सी जगह में इकट्ठे प्रार्थना करना चाहते हों, तो किसी भी सरकार को कैसे दोषी ठहराया जा सकता है?'

मेरे जैसे लोग आस्थावानों के अडिग भाग्यवाद पर प्रश्न कर सकते हैं, शायद समस्या का यह भी एक हिस्सा है। आप में कुछ अधिक उद्वेलित हुए अपने पैर पटकते हुए मांग कर सकते हैं कि इस मुख्यमंत्री को बर्खास्त करो, उस डीजीपी का तबादला करो। इसके बजाय, मेरा आपसे अनुरोध है कि गर्माइश भरे अपने घरों से बाहर निकलकर निकटतम रेलवे स्टेशन पर पहुंचें, जहां से प्रयागराज के लिए 'कुंभ स्पेशल' रेलगाड़ियां रवाना हो रही हैं। अपने सिर पर खाने—पीने का सामान लादकर ले जाते श्रद्धालु दिखेंगे रू सबसे गरीब तबके के लोग, जिनके पास आलम्बन के तौर पर सर्वशक्तिमान में विश्वास के अलावा कुछ भी नहीं है दृयह सोचकर कि शायद, किसी दिन, वह उनकी हालत बहुराएगा। रेल के डिब्बे इंसानों से खचाखच भरे हैं, तंबई रंग के चेहरों पर काली, उम्मीद भरी आंखें, सिर पर गमछा बांधे पुरुष, चमकीले रंग की साड़ियां पहने महिलाएं लाल, नारंगी, गुलाबी दृ जो कि उर्वरता और मेले के रंग हैं। बेशक, यह तीर्थयात्रा आनंद पाने के लिए भी है।

गंगा पर बने पंटून पुलों से होते हुए संगम की ओर जाते वक्त और वहां से वापसी के दौरान 'जय मां गंगे' का जयकारा गूंजता रहता है! वह रेत, जहां बमुश्किल पांच साल पहले, कोविड के भयानक वर्षों के दौरान शवों को दफनाया गया था। उस रेत को सूंघते—खोदते कुत्तों की तस्वीरें आपको याद होंगी। अब परिवार के परिवार उसी रेत पर विश्राम कर रहे हैं, किटकैट चॉकलेट के रैपरों से बनी प्लास्टिक की चादरों पर। गृह मंत्री अमित शाह और उनकी पत्नी, और साथ में योगी भी, सोमवार को संगम में डुबकी लगाने पहुंचे थे। इसलिए शहर को जोड़ते 17 पुलों को पुलिस ने सुरक्षा के नाम पर बंद कर दिया था। असहनीय थकान से चूर, गोद में बच्चा उठाए मांएं और वृद्ध की दृश्यावली है, जो यूपी पुलिस से उन्हें जाने देने की गुहार लगा रहे थे, लेकिन उसने एक न सुनी। अब उनको 4 किमी. आगे जाकर बने 18वें और 19वें पुल तक और घिसटना पड़ा। पुलिस वालों का कहना था : 'ऊपर से आदेश आया है।'

मौनी अमावस्या की भगदड़ से एक छोटा—मोटा राजनीतिक वाकृ युद्ध छिड़ गया, जिसमें अखिलेश यादव ने बदइंतजामी का आरोप जड़ा और कहा कि मौतों की बताई जा रही कम संख्या पर उन्हें विश्वास नहीं है, जबकि राहुल गांधी ने 'यौआईपी संस्कृति' के बारे में शिकायत की है, जो आम लोगों के साथ भेदभाव करती है। निश्चित रूप से, अभी भी कई लोग लापता हैं। न्यायिक जांच सच्चाई का पता लगाने की कोशिश करेगी, लेकिन तथ्य यही रहेगा कि उत्तर प्रदेश की राजनीति के महासागर में हलचल मचाने को विपक्षी नेताओं की कही एक भी बात का बूंद बराबर भी असर नहीं है, क्योंकि उन्हें मौजूदा राजनीतिक स्थिति में गंभीर विकल्प के रूप में नहीं देखा जाता। योगी के खिलाफ कोई भी गुस्सा, जैसा कि अब स्पष्ट है, केवल उन गुमनाम भक्तों की ओर से ही आएगा, जिन्हें लगता है कि बहुसंख्यक जनादेश से चुने मुख्यमंत्री ने उनका ख्याल रखने के लिए पर्याप्त नहीं किया। इसके अलावा, आलोचक यह भी कहेंगे कि यह गुस्सा राजनीतिक चुनौती में तब तक तबदील नहीं हो सकता जब तक कि किसी के द्वारा इसे दिशा नहीं दी जाती। यूपी में चाहे ऊपर देखें या नीचे— आज कोई एक ऐसा नेता नहीं है जिसके पास विश्वसनीयता, राजनीतिक कूवत या टिकने का वह माद्दा हो, जो भाजपा का सामना कर सके।

विपक्षी नेताओं को सत्ताधारी पार्टी को उसके निरंकुश व्यवहार के लिए कोसना पसंद है दृ और भगवान जाने, उनमें बहुत से सही कह रहे हैं। लेकिन देखिए तो, जब पिछले हफ्ते अरविंद केजरीवाल और भाजपा के बीच दिल्ली में यमुना की गंदगी को लेकर राजनीतिक उबाल बना तो राहुल गांधी ने क्या किया? उन्होंने एसएनडीआरपी नामक एनजीओ के एक कार्यकर्ता को नाव में साथ लिया और नदी का मुआयना करने निकले दृ जो वास्तव में अब एक नाले जितनी बची है ताकि उससे जान सकें कि चल क्या रहा है। पीठ पीछे से आती किरणों में राहुल की छवि बढ़िया लग रही थी। लेकिन चलिए सीधे मुद्दे पर आते हैं और उनसे पूछते हैं कि दिल्ली में कांग्रेस को कितने वोट मिलने जा रहे हैं? और अगर राहुल मोदी की भाजपा के खिलाफ एक संयुक्त अखिल भारतीय ब्लॉक बनाने के लिए इतने ही उत्सुक हैं, तो उन्होंने पिछले साल हरियाणा के चुनावों में आम आदमी पार्टी के साथ गठबंधन करने वाले उनकी सलाह का विरोध करने वाले अपने पार्टी कार्यकर्ताओं के फैसले को उलट क्यों नहीं दिया? और इस बार दिल्ली में उन्होंने वही विचार क्यों नहीं पेश किया? याद दिला दें, हरियाणा में जीतने वाली भाजपा (39. 94:) और हारने वाली कांग्रेस (39. 09:) के बीच वोट—विभाजन का अंतर महज 0.85 प्रतिशत अंक रहा, जबकि आम आदमी पार्टी ने 1.79 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। अंदाजा लगाइए कि अगर कांग्रेस और 'आप' मिलकर लड़े होते तो कौन जीतता। फिर भी, कांग्रेस सबक सीखने को राजी नहीं। चुनावों के करीब चार महीने बाद भी पार्टी में अराजकता और तदर्थवाद की भावना व्याप्त है दृयहां तक कि राज्य में विधायक दल का नेता अभी तक नियुक्त नहीं किया गया।

हरियाणा की शानदार जीत ने भाजपा को महाराष्ट्र जीतने के लिए जोश से भर दिया। और अब 5 फरवरी को मतदान के साथ दिल्ली के लिए सबसे महत्वपूर्ण लड़ाई बस होने को है। यह कोई संयोग नहीं है कि प्रधानमंत्री ने संगम में डुबकी लगाने के लिए उसी दिन को चुना है दृ इसके मायने हैं कि सभी टीवी चौनल मोदी के कुंभ स्नान को बहुत अधिक महत्व देंगे, जिसका अर्थ यह भी है कि दिल्ली के लिए जीवन—मरण की लड़ाई की कवरेज दूसरे स्थान पर सरक जाने का खतरा है।

जहां तक प्रयागराज में जीवन और मरण की लड़ाई की बात है, यहां विपक्ष के लिए एक सबक भी है। साल 2022 में, भाजपा ने फिर से यूपी जीता था (समाजवादी पार्टी की 111 सीटों के मुकाबले 255 सीटें लेकर) इस तथ्य के बावजूद कि योगी का प्रशासन कोविड से निपटने में विफल रहा और लोग मक्खियों की तरह मरे थे। लेकिन योगी फिर भी जीत गए क्योंकि कोई विकल्प बनकर प्रस्तुत नहीं हो पाया— समाजवादी पार्टी के कई नेता दिल्ली खिसक लिए तो कुछ लंदन चले गए। महामारी के दौरान गंगा के किनारे पर शव यात्राओं और दाह संस्कारों में अर्थी को कंधा देने के लिए वे वहां मौजूद नहीं थे।

यही कारण है यूपी में सब राम भरोसे है। इसलिए नहीं कि भाजपा हर गांव और शहर में हर वोट के लिए जूझती है, बल्कि इसलिए कि विपक्ष ऐसा नहीं कर पा रहा।

—लेखिका 'द ट्रिब्यून' की प्रधान संपादक हैं।

जलवायु परिवर्तन और बचपन

— ललित गर्ग—

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष यानी यूनिसेफ की रिपोर्ट 'लर्निंग इंटरप्टेड रू ग्लोबल स्नैपशॉट ऑफ क्लाइमेट—रिलेटेड स्कूल डिसरप्शंस इन 2024' में चौंकाने वाले तथ्यों एवं खुलासे ने बच्चों को लेकर चिन्ता को बढ़ा दिया है। अब तक कृषि व मौसम के चक्र पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के अध्ययन निष्कर्ष तो सामने आते रहे हैं, लेकिन जलवायु परिवर्तन का बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य विषयक ऐसा संवेदनशील अध्ययन पहली बार सामने आया है, जिसने जहां नीति—निर्माताओं और शिक्षाविदों को चिन्ता में डाला है वहीं अभिभावकों की परेशानियों को बढ़ा दिया है। सरकार पर भी दबाव बनाया कि वह बच्चों व शिक्षा पर जलवायु परिवर्तन से होने वाले घातक असर को कम करने के लिये कारगर नीतियां बनाये एवं उन्हें तत्परता से लागू करें। इस रिपोर्ट के अनुसार गत वर्ष सिर्फ भारत में लगभग पांच करोड़ छात्र लू एवं अत्यधिक गर्मी के कारण प्रभावित हुए। जलवायु परिवर्तन सिर्फ हमारे पर्यावरण पर ही असर नहीं डाल रहा है बल्कि बच्चों की शिक्षा पर भी गहरा और खतरनाक असर डाल रहा है। ओस्लो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की पोस्ट डॉक्टरल फेलो डॉ केटलिन एस प्रेंटिस और उनके सहयोगियों ने इस बारे में विस्तृत अध्ययन किया है। 'नेचर क्लाइमेट चेंज' पत्रिका में प्रकाशित इस अध्ययन के अनुसार दक्षिण एशिया, खासकर भारत, बांग्लादेश और कंबोडिया जैसे देशों में अप्रैल महीने में गरम हवा की लहरों (हीटवेव) ने शिक्षा व्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित कर दिया।

जलवायु परिवर्तन के लिहाज से भारत को बेहद संवेदनशील देश करार दिया गया। वर्ष 2024 में दुनिया के 85 देशों में 24.2 करोड़ बच्चों की पढ़ाई चरम मौसम के कारण बाधित हुई। इसका अर्थ यह है कि वर्ष 2024 में दुनिया भर के स्कूल जाने वाले हर सात बच्चों में से एक बच्चा मौसमी बाधाओं के कारण कभी न कभी स्कूल नहीं जा सका। शोध के अनुसार बढ़ती गर्मी एवं गर्म दिनों की अधिक संख्या ने न केवल बच्चों के स्वास्थ्य को बल्कि परीक्षा परिणामों को खराब किया। मौसमी बाधाओं का असर बच्चों की शिक्षा पर लंबे समय तक रहता है। यूनिसेफ ने अपनी रिपोर्ट में चेताया है कि यदि ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन ऐसे ही जारी रहा, तो वर्ष 2050 तक बच्चों के गरम हवाओं के संपर्क में आने की संभावना आठ गुनी बढ़ जाएगी। सार्वभौमिक तापमान में लगातार होती इस वृद्धि के कारण विश्व के पर्यावरण पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है, उससे मुक्ति के लिये जागना होगा, संवेदनशील होना होगा एवं विश्व के शक्तिसम्पन्न राष्ट्रों को सहयोग के लिये कमर कसनी होगी तभी हम जलवायु परिवर्तन से जुड़े बच्चों के संकट से निपट सकेंगे अन्यथा यह विश्व के बच्चों के प्रति बड़ा अपराध होगा, उनके विनाश का कारण बनेगा।

ग्लोबल वार्मिंग के खतरों ने दुनिया को चिन्ता में डाला है, इसने भारतीय जनजीवन, पर्यावरण, जीवजंतु, एवं कृषि के दरवाजे पर ऐसी दस्तक दी है, जो न केवल चिन्ताजनक है बल्कि अनेक खतरों की टंकार है। रिकॉर्ड तोड़ गर्मी से जहां सामान्य जन—जीवन बाधित है, पीने के शुद्ध पानी के स्रोत सूखने लगे है, वहीं खेती किसानी पर भी नया संकट मंडरा रहा है। गत वर्ष भारत मौसम विज्ञान विभाग ने जानकारी दी थी कि वर्ष 2024 में भारत में गर्मी के सारे पुराने रिकॉर्ड टूट गये थे। यह वर्ष 1901 के बाद से सबसे गर्म साल के तौर पर दर्ज हुआ था। यूनिसेफ ने स्पष्ट किया है कि जलवायु संकट न केवल बच्चों की शिक्षा, बल्कि उनके पूरे भविष्य को खतरे में डाल रहा है। यदि इस संकट से निपटने के लिए तत्काल प्रभावी एवं जरूरी कदम नहीं उठाये गये, तो इसके बुरे असर को लंबे समय तक महसूस किया जाएगा और नयी पीढ़ी का जीवन अनेक खतरों से घिर जायेगा। अब जरूरी हो गया है कि सरकार शिक्षा पर जलवायु परिवर्तन के असर को कम करने के लिए ठोस रणनीतियां बनाने को आगे आये।

जलवायु परिवर्तन से बच्चों की शिक्षा ही नहीं, बल्कि अन्य कई तरह के प्रभाव पड़ते हैं। जलवायु परिवर्तन से बच्चों का शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, और शिक्षा प्रभावित होती है। विशेषतः गर्मी से होने वाली बीमारियां और मौतों का खतरा बढ़ता है और हैजा, मलेरिया, डेंगू, और जीका जैसी बीमारियां खतरनाक तरीके से जीवन को घेरती है। गर्भावस्था के दौरान अत्यधिक गर्मी के संपर्क में आने से जन्म के समय कम वजन के बच्चे पैदा होने की संभावनाएं बढ़ जाती है। पर्यावरण विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने का खतरा बढ़ता है। अत्यधिक गर्मी की वजह से होने वाली आपदाओं में मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है और अवसाद, चिंता, नींद संबंधी विकार और सीखने की कठिनाइयां उग्रतर हो जाती है। इन्हीं सब कारणों से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है

नये दौर में चीन, अमेरिका

— कमलेश पाण्डेय—

चीन दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश बनना चाहता है और ऐसा वह उस अमेरिका की कीमत पर करना चाहता है जिसने उसके नवनिर्माण और समुत्थान में महती भूमिका निभाई है। हालांकि अमेरिका भी इसे भलीभांति समझ चुका है और समुपस्थित विभिन्न परिस्थितियों से निपटने के लिए रणनीतिक रूप से आगे बढ़ रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और विदेश मंत्री मार्को रुबियो के डॉलर की चिंता और उसके लिए जिम्मेदार चीन सम्बन्धी हालिया बयानों पर जब आप गौर करेंगे तो यह समझ जाएंगे कि अमेरिका की चिंता सिर्फ डॉलर की गिरती साख को ही बचाने की नहीं है बल्कि वह सोवियत संघ की भांति ही अब चीन को भी निबटाने की रणनीति पर फोकस कर चुका है। ऐसे में सुलगता सवाल यह है कि क्या अमेरिका सिर्फ डॉलर के दम पर चीन जैसे भस्मासुर से निबटेगा या फिर कुछ अन्य मौजूं उपाय भी करेगा! उल्लेखनीय है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अमेरिकी डॉलर की जगह किसी और मुद्रा के इस्तेमाल का प्रयास करेंगे तो वह उन पर 100 प्रतिशत शुल्क लगा देंगे। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा कि ब्रिक्स देश डॉलर से दूर जाने की कोशिश करें और हम खड़े होकर बस देखते रहें, इस तरह के विचारों के दिन लद चुके हैं। लिहाजा, वह ब्रिक्स देशों से यह प्रतिबद्धता चाहते हैं कि वे न तो नई मुद्रा बनाएंगे और न ही किसी अन्य मुद्रा का समर्थन करेंगे।

वहीं, अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने भी कहा है कि इस मसले पर चीन से हमें निबटना होगा। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया है कि हम इस मुद्दे पर युद्ध नहीं चाहते हैं, लेकिन हम इस पर गौर करने जा रहे हैं। क्योंकि चीन दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश बनना चाहता है और वे ऐसा हमारी कीमत पर करना चाहते हैं। इससे निपटना होगा। बता दें कि चीन की वैश्विक रणनीति को लेकर अमेरिका अब सजग हो चुका है और आर्कटिक व दक्षिण अमेरिका में चीनी गतिविधियों से उत्पन्न खतरे को निर्मूल करने के लिए ही ग्रीनलैंड पर कब्जा करने, पनामा नहर पर पुनः नियंत्रण पाने और कनाडा को अमेरिका में मिलाने जैसी दूरदर्शिता भरी रणनीति का आगाज समय रहते ही कर चुका है, भले ही वह पहले जितना आसान नहीं हो।

जानकार बताते हैं कि रूस—चीन—ब्राजील जैसे ब्रिक्स देश अमेरिकी डॉलर और यूरो पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं। इसी नजरिए से साल 2022 में 14वें ब्रिक्स समिट के दौरान रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने कहा था कि सदस्य देश नई रिजर्व करेंसी शुरू करने की योजना बना रहे हैं। इसके अलावा, ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा ने भी डॉलर के दबदबे को कम करने के लिए ब्रिक्स करेंसी बनाने का सुझाव दिया था। क्योंकि आंकड़े बताते हैं कि वैश्विक मुद्रा भंडार के रूप में डॉलर का हिस्सा 59 प्रतिशत है, जबकि दुनिया के कुल कर्ज में 64 प्रतिशत का लेनदेन डॉलर में होता है। वहीं, अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन में भी डॉलर की 58 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

खास बात यह है कि यूरोपीय संघ बनने और उसकी मुद्रा यूरो के अस्तित्व में आने के बाद से डॉलर के दबदबे में कमी आई है, लेकिन अभी भी यह सबसे अधिक चलन वाली मुद्रा बनी हुई है। ऐसे में यदि ब्रिक्स देश भी कोई नई मुद्रा ले आते हैं तो इससे डॉलर का मूल्य घटेगा। शायद इसलिए अमेरिका अब चौकन्ना हो चुका है और इस नए सम्भावित संकट से निबटने के लिए साम—दाम—दंड—भेद की नीति अख्तियार कर लिया है।

कलयुगी बाप ने ही लूटी बेटी की इज्जत, बंद कमरे में किया रेप, मां ने दर्ज कराया मुकदमा

संवाददाता—देवरिया। एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। जहां एक पिता ने अपनी ही बेटी के साथ रेप किया। रविवार को मां ने पुलिस को तहरीर देते हुए घटना की जानकारी दी। उधर, पुलिस ने केस दर्ज कर आरोपी पिता को हिरासत में ले लिया। साथ ही मामले की जांच पड़ताल में जुट गई। ये घटना भाटपाररानी थाना क्षेत्र का है। पुलिस के अनुसार थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला ने रविवार को थाने में तहरीर देकर बताया है कि उनकी 13 साल की बेटी जिसके साथ उसके सगे पिता ने दुष्कर्म की वारदात की है। घटना ढाई महीने पहले की है। रविवार को विवाद होने के बाद इसकी शिकायत महिला ने पुलिस से की। उधर, सूचना मिलने पर पुलिस महकमें में भी हड़कंप मच गया। पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध दुष्कर्म का केस दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया। साथ ही मामले जांच पड़ताल में जुट गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर फॉरेंसिक टीम द्वारा घटनास्थल का निरीक्षण गया। इस मामले में एसपी देवरिया विक्रांत वीर ने बताया कि महिला की तहरीर पर आरोपी पिता के विरुद्ध दुष्कर्म का केस दर्ज कर घटना स्थल का निरीक्षण किया गया है। फॉरेंसिक टीम द्वारा साक्ष्य संकलन कर अग्रिम कार्रवाई की जा रही।

शिक्षकों को दिया गया स्वच्छता किट, बच्चों को बताएंगे स्वच्छता का तरीका

संवाददाता—श्रावस्ती। डिटॉल बनेगा स्वस्थ इंडिया स्वच्छता शिक्षा कार्यक्रम के तहत शिक्षकों को स्वच्छता किट प्रदान किया गया। जिसमें स्वच्छता संबंधित शिक्षक को मैन्युअल पुस्तक, विद्यार्थियों के कार्यपुस्तिका, पोस्टर, स्कूल कीट व साबुन उपलब्ध कराया गया। विकास भवन सभागार में सोमवार को स्वच्छता किट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर जिला विकास अधिकारी राम समुझ व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अजय कुमार की ओर से शिक्षकों को स्वच्छता सामग्री किट वितरित किया गया। इस कार्यक्रम के तहत सिरसिया विकास क्षेत्र के 21 स्कूलों के शिक्षकों का चयन किया गया जिन्हें किट दिया गया। जिला समन्वयक सियाराम अवस्थी ने कहा कि चयनित विद्यालयों के शिक्षकों को स्वच्छता शिक्षा कार्यक्रम का किट दिया गया है। इससे स्कूलों में स्वच्छता की पाठशाला चलाई जाएगी। जिसमें संबंधित टूल के माध्यम से बच्चों को स्वच्छता के महत्व को बताते हुए उन्हें स्वच्छ आदतों को अपनाने के लिए जानकारी दी जाएगी।

मामा के घर आई 6 साल की बच्ची के साथ दरिंदगी, खेलने के बहाने पड़ोसी ने किया रेप

संवाददाता—देवरिया। बनकटा थाना क्षेत्र के एक गांव में मामा के घर आई एक 6 साल की बच्ची के साथ पड़ोसी ने रेप किया। घटना की जानकारी होने पर पीड़िता की मां ने पुलिस को तहरीर देकर कारवाई की मांग की है। सूचना पर एसपी विक्रांत वीर ने घटना स्थल का निरीक्षण कर केस दर्ज करने का निर्देश दिया है। उधर आरोपी को पुलिस गिरफ्तार कर लिया गया है साथ ही पुलिस कार्रवाई में जुट गई है। बनकटा थाना क्षेत्र के एक गांव एक महिला अपनी 6 वर्षीय बच्ची के साथ मायके आई है। पड़ोस के 53 साल के व्यक्ति शनिवार को उनकी बच्ची को खेलने के बहाने ले गया और दुष्कर्म का प्रयास किया। दूसरे दिन रविवार भी आरोपी बच्ची को उठा ले गया और उसके साथ रेप किया। घटना की जानकारी होने पर बच्ची की मां ने पुलिस से शिकायत की। शिकायत मिलते ही हरकत में

आई पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधीक्षक विक्रांत वीर ने भी घटना स्थल का निरीक्षण कर जानकारी ली। फॉरेंसिक टीम ने भी मौके पर पहुंच कर साक्ष्य एकत्र किया। मामले में पुलिस विधिक कार्रवाई में जुटी है। इस मामले में एसपी विक्रांत वीर ने बताया कि बनकटा थाना क्षेत्र में पड़ोसी ने बच्ची के साथ दुष्कर्म किया है। महिला की शिकायत पर केस दर्ज कर अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया गया है। मौके से पुलिस ने साक्ष्य संकलन की है और विधिक कारवाई की जा रही है। पुलिस अधीक्षक विक्रांत वीर के मुताबिक, मामला भाटपार रानी थाना क्षेत्र के एक गांव का है, जहां एक महिला ने अपने पति के खिलाफ उसकी 13 वर्षीय बेटी के साथ दुष्कर्म करने की शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत मिलने पर पुलिस फॉरेंसिक टीम के साथ फौरन घटनास्थल पर पहुंची और आरोपी टुनटुन पासवान को गिरफ्तार कर लिया।

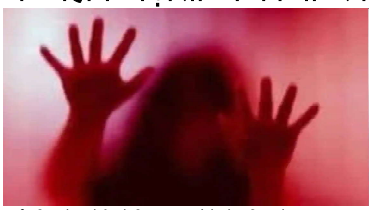

गृहे-गृहे संस्कृतम् शिविर का शुभारम्भ

संवाददाता—श्रावस्ती। विकास क्षेत्र सिरसिया के प्राथमिक विद्यालय बहादुरपुर में सोमवार को उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ की ओर से संचालित गृहे—गृहे संस्कृतम् शिविर का शुभारम्भ किया गया। मुख्य अतिथि शिक्षक अभिषेक पाण्डेय ने सरस्वती मां के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया।

अदालती नोटिस

प्रारूप 7

(देखे नियम—11 (1)

घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, 2005 की धारा—12 (1) के अधीन हाजिर होने के लिए सूचना अदालत—जे0एम0 / एफ0टी0सी0 (महिलाओ के विरूद्ध अपराध) महोदय बस्ती जिला—बस्ती

प्रार्थना पत्र सं0 561 / 2023

अंजनी

बनाम

संदीप आदि

1. संदीप उम्र 30 साल पुत्र राजमणि शर्मा 2. राजमणि शर्मा पुत्र वंशीलाल उम्र 58 साल 3. गीता देवी उम्र 55 साल पत्नी राजमणि शर्मा 4. विपिन उम्र 26 साल पुत्र राजमणि शर्मा 5. चुना देवी पत्नी संजीत साकिनान पूरेडाल (भटपुरवा) थाना उमरीबेगम जिला—गोण्डा (अभिुक्तगण)

तारीख पेशी 20—02—2025

याची ने घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, 2005 (2005 का 43) की धारा— 12 के अधीन आवेदन फाइल किया है / किये है। आपको यह कारण बताने के लिए कि क्यों न आवेदक द्वारा मांगे गये (अनुतोषो) को आपके विरूद्ध प्रदान कर दिया जाय व्यक्तिगत रूप से या सम्यक रूप से प्राधिकृत काउन्सेल के मार्पत तारीख 20 मास 02 सन् 2025 को बजे पूर्वान्ह / अपरान्ह में इस न्यायालय के समक्ष हाजिर होने का निर्देश दिया जाता है। इसमे असफल होने पर न्यायालय एक पक्षीय कार्यवाही करेगा। मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा के अधीन तारीख को दी गयी।

द0 हाकिम

डीएम कार्यालय पर आत्मदाह करने पहुंचा युवक, पुलिस ने रोका

संवाददाता—महराजगंज। डीएम कार्यालय पर सोमवार को उस समय सनसनी मच गई जब पुरन्दरपुर थाना क्षेत्र का एक युवक हाथ में पेट्रोल भरा बोतल लेकर बैठ गया। कहने लगा कि उसकी कहीं सुनवाई नहीं हो रही है। इसलिए वह आत्मदाह करने आया है। यह देख पुलिस कर्मी युवक के पास पहुंचे। उसके हाथ से पेट्रोल भरा बोतल लेकर पूछताछ के बाद जांच—पड़ताल करने लगे। पता चला कि उसकी शिकायत पर पुरन्दरपुर पुलिस ने विपक्षी के कार्य को रोक दिया है। थाने से घर जाने के बजाय वह जिला मुख्यालय आ गया था।

माामला पुरन्दरपुर थाना क्षेत्र के सिसवनिया विशुन गांव का है। जिला मुख्यालय पहुंचा कमलेश नाम का युवक का कहना था कि गांव में पैतृक सम्पत्ति है। इसके तीन हिस्सेदार हैं। युवक का आरोप है कि एक हिस्सेदार जबरन जमीन पर दीवार चला लिया है। अब उसका छत लगवाने जा रहा है। शटरिंग का सामान गिरा लिया है। मना करने पर विवाद कर रहा है। बीते 24 जनवरी को आरोपित उसको मारे—पीटे भी हैं। युवक का आरोप है कि इस मामले में पुरन्दरपुर पुलिस से शिकायत की गई लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। उसके खिलाफ फर्जी शिकायत कराई गई, जिसके आधार पर सुलह—समझौता कराया गया। युवक की मांग है कि जब तक जब तक भूमि का बंटवारा ना हो जाए तब तक विपक्षी द्वारा छत लगाने से रोका जाए। इस मामले में पुरन्दरपुर पुलिस का कहना है कि युवक सोमवार सुबह थाने पर आया था। उसकी शिकायत पर पुलिस कर्मियों को भेज छत लगाने के काम को रोक दिया गया है। युवक थाने से घर जाने के बजाय जिला मुख्यालय चला गया। पुलिस के मुताबिक 2015 में बंटवारा हो चुका है। पीड़ित युवक अपना मकान बनवा लिया है। दूसरा पक्ष वर्ष 2023 में ही मकान का दीवार खड़ा कराया है। अब युवक का कहना है कि उसका दीवार तोड़वा कर दरवाजे पर ट्रैक्टर आने—जाने के लिए रास्ता दिलाया जाए। कोई स्थगन आदेश भी नहीं है। एसओ पुरंदरपुर पुरुषोत्तम राव ने बताया कि काम रोकने के बाद दोनों पक्ष को थाने पर बुलाया गया है। दूसरा पक्ष आ गया है। शिकायत करने वाले कमलेश को बुलाया जा रहा है तो उसका कहना है कि वह जिला मुख्यालय गया है। मामले का विधिक प्रक्रिया के अनुसार निस्तारण कराया जाएगा।

तापमान में तेजी से बढ़ोत्तरी ने किसानों के उड़ाए होश

संवाददाता—महराजगंज। फरवरी महीने में दिन में कड़ी धूप होने से एक तरह ठंड से लोगों को काफी राहत मिल रही है। वहीं दिन के तापमान में वृद्धि से किसानों के होश उड़ गए हैं। किसानों का कहना है कि लगातार कड़ी धूप होने पर गेहूं की उत्पादकता पर असर पड़ सकता है। महराजगंज के किसानों ने रबी सीजन में इस बार 1.45 लाख हेक्टेयर में गेहूं की खेती की है। अधिकतर किसानों ने गेहूं की दूसरी सिंचाई को पूरा कर लिया है। इसके बाद खेतों में यूरिया डालने में लगे हुए हैं। लेकिन फरवरी महीने में मौसम के साफ होने से किसान बड़ी टेंशन में हैं। इस समय फरवरी महीने में सामान्य तौर पर हर दिन 25 से लेकर 27 डिग्री से. अधिकतम तापमान रह रहा है। इस तरह के तापमान में गेहूं की खेती को नुकसान पहुंचने की आशंका बन गई है। ऐसे में किसान चितिंत हैं। घुघली क्षेत्र के प्रगतिशील किसान विजय कुमार मिश्रा, सियाराम दास, अजीत सिंह, भोला राय, ज्योतिभान मिश्रा, चंद्रभान पटेल, ओमप्रकाश जायसवाल, इंद्रजीत चौधरी, बीरेन्द्र सिंह, उदयभान सिंह, सियार पांडेय, आदि ने बताया कि तापमान में इसी तरह से बृद्धि होगा तो गेहूं की उत्पादकता पर ज्यादा असर पड़ेगा। किसानों की गाढ़ी कमाई खेत में पूरी तरह से फंस गई है। इस तरह के मौसम में किसानों को नुकसान होने की आशंका है। फरवरी महीने में दिन में कड़ी धूप होने से कृषि वैज्ञानिक भी चितिंत है। कृषि विज्ञान केन्द्र बसुली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. शिवपूजन यादव ने बताया कि रबी फसलों के लिए निरन्तर तापमानों में बृद्धि ठीक नहीं है। दिन में 25 डिग्री से. तापमान गेहूं की खेती के लिए ठीक नहीं है। गेहूं की खेती के लिए दिन में 23 डिग्री तापमान अनुकूल रहता है। पर दो से तीन डिग्री अधिक तापमान उत्पादन पर असर डाल सकता है। इसी प्रकार कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. धीरेंद्र प्रताप सिंह, डॉ. विजय चंद्रा, त्रिवेणी तिवारी ने बताया कि इस तरह के मौसम में किसान अपनी खेत में पर्याप्त नमी बनाएं रखें।

तेंदुए ने गाय को बनाया निवाला, नोंचकर खा गया, ग्रामीणों ने खदेड़ा

संवाददाता—श्रावस्ती। सोहेलवा जंगल से निकल कर आए एक तेंदुए ने रविवार रात बालू घोलिया गांव के मजरा बालू व घोलियां में दो गायों को मौत के घाट उतार दिया। इस दौरान जहां घोलिया में गाय को निवाला बनाया। वहीं बालू में गाय को मार कर ले जा रहा तेंदुआ ग्रामीणों के हाका लगाने के बाद छोड़ कर जंगल की ओर भाग गया। घटना के बाद गांव में दहशत फैल गई है। सिरसिया थाना क्षेत्र का ग्राम बालू घोलिया सोहेलवा जंगल के पास स्थित है। जहां जंगल से रविवार रात निकलकर आए एक तेंदुए ने ग्राम घोलिया निवासी लक्ष्मी नारायण पुत्र प्रयाग दत्त के मड़हे मे बंधी गाय पर हमला बोल दिया और नोच कर खा गया। इसके बाद तेंदुए ने गांव के ही मजरा बालू निवासी ओमकार पुत्र राम नरेश की गाय को गर्दन पकड़ कर खेत में उठा ले गया। इस दौरान गाय की चीख पर लाठी डंडा लेकर हाका लगाते हुए दौड़े ग्रामीणों को आता देख तेंदुआ गाय को छोड़कर जंगल की ओर भाग गया। घटना में गाय की मौत हो गई जिसके गर्दन पर तेंदुए के पंजे के निशान मौजूद थे। ग्रामीणों की सूचना पर सोमवार सुबह पहुंचे रेंजर पूर्वी सोहेलवा अनिमेश वर्मा, वन दरोगा ज्वाला प्रसाद, दिनेश चौहान, वन रक्षक अखिलेश शर्मा, अजय कुमार, विवेक, विभूतिनाथ चौकी प्रभारी संदीप कुमार व एसएसबी से एसके यादव ने घटनास्थल का जायजा लिया। इस दौरान रेंजर ने ग्रामीणों से एहतियात बरतने की अपील की। घटना के बाद ग्रामीणों में दहशत फैल गई है।

एसपी ने सुनी लोगों की शिकायत

संवाददाता—श्रावस्ती। पुलिस कार्यालय में सोमवार को पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया की अध्यक्षता में जनता दर्शन का आयोजन किया गया। जिसमें पहुंचे लोगों की शिकायत सुनी गई और उन शिकायतों के निस्तारण के लिए संबंधित को निर्देशित किया। जनसुनवाई के दौरान छह शिकायती पत्र प्राप्त हुए। जिसमें एक भूमि विवाद, दो पारिवारिक विवाद व तीन अन्य विवादों से संबंधित रहे। एसपी ने संबंधित को निर्देशित किया कि सभी शिकायतों का समय से निस्तारण करें।

मिल में ट्रिपलर के नीचे दबा किसान का पैर, गंभीर

संवाददाता—महराजगंज। ठूठीबारी कोतवाली क्षेत्र के गड़ौरा चीनी मिल परिसर में सोमवार को एक किसान का पैर ट्रिपलर के नीचे आ गया। इससे किसान का पैर बुरी तरह जख्मी हो गया। मौके पर मौजूद लोगों के अनुसार आधे घंटे तक किसान छटपटाता रहा और उसे कोई सहायता नहीं मिली। इससे गुस्साए किसानों ने मिल के कुछ कर्मियों को पीट दिया। इससे अफरा—तफरी का माहौल पैदा हो गया। कुछ देर बाद मिल के एक स्टाफ के निजी वाहन से घायल को सीएचसी निचलौल पहुंचाया गया, जहां मरीज की हालत नाजुक देख उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। वहीं परिजन उसका इलाज महराजगंज के एक निजी अस्पताल में करवा रहे हैं। घायल किसान महबूब निचलौल क्षेत्र के झुलनीपुर का रहने वाला बताया जा रहा है।

मिल में घटना के समय मौजूद किसान आजाद, रहीम व तुलसी ने बताया कि चीनी मिल का ब्वायलर फटा होने से सभी किसान अपने वाहनों पर ही थे। सब मिल चलने का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान ट्राली को ट्रिपलर से उठाकर गन्ने को एक किसान महबूब द्वारा डोंगे में गिराया जा रहा था। अचानक ट्रिपलर किसान के पैर पर गिर गया, जिससे वह बुरी तरह चीखने—चिल्लाने लगा। आवाज सुनकर परिसर में किसानों की भारी भीड़ इकट्ठा हो गई। आरोप है कि आधे घंटे तक किसान की किसी ने सुधि नहीं ली और वह तड़पता रहा। इससे नाराज किसानों ने मौजूद कर्मियों को मारना शुरू कर दिया, जिससे हंगामा शुरू हो गया। किसानों का कहना रहा कि अगर तुरंत प्रेशर को उठा दिया गया होता तो शायद किसान को राहत मिल जाती।

योगेन्द्र कुमार, प्रभारी कोतवाल ने कहा कि हादसे की खबर पर मौके पर कोतवाली स्टाफ को भेजकर घायल को निचलौल सीएचसी भेजा गया। जिम्मेदारों को बुलाया गया है।

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान अपर जिला जज प्रथम महोदय अयोध्या

सिविल अपील संख्या 8 / 2021

वृजेश

बनाम

अम्बिका प्रसाद आदि

बनाम—1— अम्बिका प्रसाद पुत्र स्वर्गीय हरि प्रसाद मिश्र निवासी ग्राम— लुतफाबाद बछौली परगना पश्चिम राठ तहसील बीकापुर जनपद— अयोध्या 2— विजय कुमार तिवारी 3— रविन्द्र कुमार तिवारी 4— सत्येन्द्र कुमार तिवारी 5— अजय कुमार तिवारी पुत्रगण स्वर्गीय जर्नादन प्रसाद निवासी ग्राम— मलेथू कनक परगना पश्चिम राठ तहसील बीकापुर जिला— अयोध्या, 7 / 1 सर्वेश कुमार 7 / 2 विश्वदेव तिवारी 7 / 3 अवतंश कुमार तिवारी पुत्रगण स्वर्गीय श्लोक प्रसाद निवासीगण ग्राम— मलेथू कनक परगना पश्चिम राठ तहसील बीकापुर जिला— अयोध्या

तारीख पेशी 17—02—2025

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2025 के माह 02 के 17 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 25 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

मेले में किसानों को सहफसली खेती के बताए गए गुर

संवाददाता—गोण्डा। ब्लॉक परिसर में सोमवार को किसान मेले का आयोजन किया गया, जहां किसानों की उपज व आय बढ़ाने के सन्दर्भ में जानकारी दी गई। मेले का शुभारंभ उप निदेशक कृषि प्रेम कुमार ठाकुर, पूर्व राज्यमंत्री रामबहादुर सिंह व जिला पंचायत सदस्य महेंद्र सिंह ने किया। उपनिदेशक कृषि ने किसानों की आय बढ़ाने के लिए सहफसली व नकद फसलों की खेती करने सलाह दी। उन्होंने फसलों में लगने वाले रोग व उनके उपचार के बारे में भी बताया। मेले में गन्ना, पशुपालन, फसल बीमा, वर्मी कम्पोस्ट, व, लघु सिंचाई आदि ने स्टाल लगाया। पूर्व उप संभागीय कृषि प्रसार अधिकारी एसपी शर्मा ने किसानों खेती के सम्बंधित तमाम नई जानकारियां दी। मेले में प्रगतिशील किसान कोठा के भीतरी निवासी राम अक्षयबर सिंह ने केला बाल सुन्दरी ऐप्पल बैर, रेडलेडी ताइवान पपीता का बीएन आर अमीना पपीता मेले में स्टाल लगाया। इस मौके पर शिव कुमार मौर्य निवासी रामपुर ने तुलसी पंचांग, अलोवीरा साबुन, सहजन का पाउडर, पथरी की दवा, आंवला जूस का स्टाल लगाया। वहीं दीपक सैनी ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर प्रभारी पशु चिकित्सा अधिकारी डा विजय बहादुर वर्मा, एडीओ कृषि त्रिवेंद्र तिवारी, सुधार सिंह, मदनमोहन यादव, तुंगनाथ जायसवाल, नेहा मौर्य आदि मौजूद रहे।

ज्वेलरी की दुकान पर झांसा दे जेवर लेकर दो बदमाश फरार

संवाददाता—महराजगंज। पनियरा में शीतलपुर तिराहे के पास सोमवार दोपहर बाइक सवार दो बदमाशों ने एक ज्वेलर्स की दुकान से जेवरात उड़ाए। बदमाशों ने दुकानदार को झांसे में लेकर जेवरात देखने का बहाना बनाया। महिला के साथ जेवरात खरीदने की बात कहकर तेजी से निकल गए। कुछ ही पल में पता चल गया कि दोनों 106 ग्राम सोने का जेवरात उड़ा ले गए। दुकानदार ने शोर मचाया, लेकिन तब तक दोनों बाइक से तेजी से मुजुरी की ओर भाग निकले। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लोगों से पूछताछ कर जांच शुरू कर दी। शीतलपुर तिराहे के पास आनंद कुमार वर्मा की श्रीराम ज्वेलर्स की दुकान है। सोमवार को आनंद कहीं बाहर गया था तो उसकी पत्नी गुंजा दुकान पर बैठी थी। गुंजा के अनुसार दुकान पर नगर पंचायत की ही एक महिला और बैठी थी। वह कुछ सामान लेने आई थी। इसी बीच बाइक से दो लोग दुकान पर आए और कान का टप्स दिखाने को कहा। वह टप्स दिखाने लगी तो उन दोनों ने और वेराइटी दिखाने को कहा। दोनों में से एक कैश भी दिखा रहा था। उसने बताया कि वह जेवरात दिखा ही रही थी कि दोनों ने कहा कि अभी वे लेडीज के साथ आ रहे हैं तब जेवर फाइनल कर खरीदेंगे। वह थोड़ा सा मुड़ी ही कि जेवर की थैली लेकर दोनों बाहर निकले और बाइक से फरार हो गया। इसी बीच उसने शोर मचाना शुरू किया, लेकिन वे दोनों मुजुरी की ओर भाग निकले थे। गुंजा ने तत्काल पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ करते हुए जांच शुरू की है। घटना की सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। मामले की जांच—पड़ताल की जा रही है।

अदालती नोटिस

न्यायालय— श्रीमान सिविल जज (सी0डि0) महोदय फैजाबाद के द्वारा निकाली गयी उद्घोषणा

अर्न्तगत धारा 372 उत्तराधिकार अधि0

M.N.R.N0. 89 / 2024

रमाकान्त पाण्डेय

बनाम

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कलेक्टर महोदय फैजाबाद हर खासो आम

मृतक—गया दत्त पाण्डेय पुत्र राजाराम पाण्डेय निवासी ग्राम— अलीपुर खजुरी तहसील मिल्कीपुर परगना— पश्चिम राठ जिला — अयोध्या

मृत्यु दिनांक—10 / 04 / 2021

पेशी दिनांक— 20—02—2025

अपने मृतक को देय ऋण औरं प्रतिभूतियों को वसूल करने के लिये उत्तराधिकार प्रमाण पत्र की अभिप्राप्ति के लिये प्रार्थना—पत्र के अर्न्तगत धारा 372 अधिनियम संख्या 39 सन 1925 ई0।

चूंकि श्री निवासी ग्राम परगना तहसील जिला ने उत्तराधिकार प्रमाण—पत्र की अभिप्राप्ति के लिये आवेदन किया और 2025 के माह 02 के 20 दिवस का आवेदन की सुनवाई के लिये तिथि निश्चित की गयी है।

अतः यह उद्घोषणा निकाली जाती है कि जिस किसी को उपरोक्त आवेदन के सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो वह स्वयं अथवा अधिवक्ता द्वारा न्यायालय सिविल जज सी0डि0 फैजाबाद के न्यायालय में दिनांक 20—02—2025 को अपरान्ह 10 बजे उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करे अन्यथा उक्त तिथि के अवसान पर किसी की कोई आपत्ति नहीं सुनी जायेगी और प्रार्थना पत्र पर यथोचित आदेश पारित कर दिया जायेगा।

आज दिनांक माह सन ई0 को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश / एफ.टी.सी. द्वितीय महोदय फैजाबाद

स0प्र0 वाद संख्या 43 / 2024

राम बाबू जायसवाल आदि

बनाम

राकेश मिश्रा आदि

बनाम—1— राकेश मिश्रा पुत्र गिरिजा प्रसाद मिश्रा निवासी मकान नम्बर 305 मोहल्ला महाजनी टोला शहर व जिला— अयोध्या व्यापार दूकान नम्बर 10 मकान नम्बर 8 / 10 / 137 मोहल्ला नाका मुजफ्फरा शहर व जिला— अयोध्या 2— गौरव यादव पुत्र स्वर्गीय शिव प्रसाद यादव 3— प्रशान्त यादव पुत्र स्वर्गीय शिव प्रसाद यादव प्रोपराइटर दूकान नम्बर 10 मकान नम्बर 8 / 10 / 137 मोहल्ला नाका मुजफ्फरा शहर व जिला— अयोध्या

तारीख पेशी 07—02—2025

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2025 के माह 02 के 07 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 25 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि प्रार्थी गंगाराम पुत्र श्री स्वर्गीय रती पाल ग्राम— पाराखानी (पूरे चौधरी) तहसील मिल्कीपुर जनपद अयोध्या का निवासी है। मेरा पुत्र प्रदीप कुमार परिवार के कहने—सुनने में नहीं है। आये दिन कलह किया करता है। उसका चाल चलन ठीक नहीं है। इसे देखते हुये मैं उसे 31—01—2025 से अपने परिवार और चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर रहा हूं। अपने किसी भी प्रकार के लेन देन व व्यवहार के लिये वह स्वंय जिम्मेदार होगा। प्रकाशन इसलिये करा रहा हूं कि वक्त जरूरत पर काम आवे।

बसंत पंचमी पर स्कूलों में की गई मां सरस्वती की पूजा

संवाददाता—श्रावस्ती। बसंत पंचमी पर स्कूलों में मां सरस्वती की पूजा की गई। वहीं एसएसबी मुख्यालय में पूजन और भंडारे का आयोजन किया गया। इसी के साथ कई स्थानों पर मेले का आयोजन किया गया। 62वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल भिनगा में ऋतुराज बसंत के आगमन और बसंत पंचमी के अवसर पर संदीक्षा परिवार व वाहिनी अंकुर प्ले स्कूल के तत्वावधान में सरस्वती पूजन एवं भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वाहिनी के मंदिर प्रांगण में मां सरस्वती की मूर्ति की स्थापना कर विधिवत पूजा अर्चना की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार और हवन—पूजन के साथ हुआ। वाहिनी के अधिकारियों, जवानों, उनके परिवारजनों तथा विद्यालय के बच्चों ने श्रद्धापूर्वक मां सरस्वती की आराधना की। सभी ने ज्ञान, विद्या और बुद्धि की देवी से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए पूर्ण श्रद्धा के साथ भजन कीर्तन किया। पूजन के पश्चात विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सभी जवानों, उनके परिवारों, बच्चों और आमंत्रित अतिथियों ने प्रसाद ग्रहण किया।

आयोजन में वाहिनी के वरिष्ठ अधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने भी भाग लिया। गिरिंटबाजार संवाद के अनुसार— श्रीकृष्णा आदर्श इंटर कॉलेज हरदत्त नगर गिरंट में बसंत पंचमी पर्व पर मां ज्ञान देवी सरस्वती की पूजा अर्चना बड़े ही श्रद्धा पूर्वक किया गया। इस मौके पर प्रधानाचार्य सुनील कुमार यादव, उप प्रधानाचार्य रमेश कुमार यादव सहित शिक्षक पूजा अर्चना में मौजूद रहे।

घर के सामने टहल रहे युवक को चार पहिया वाहन ने रौंदा, मौत

संवाददाता—गोण्डा। देर शाम भोजन के बाद सड़क पर टहल रहे युवक को एक तेज रफ्तार स्कार्पियो ने रौंद दिया। हादसे मे युवक की मौके पर ही मौत हो गई। कस्बे के शुगर मिल कालोनी निवासी रितेश पाण्डेय उर्फ चंदन 20 पुत्र स्व राजकुमार पांडे रविवार की रात में नौ बजे के आसपास खाना खाकर नवाबगंज—मनकापुर मार्ग पर टहलने निकला था। वह घर से थोड़ी दूर ही पहुंचा था तभी मनकापुर की तरफ से आ रही तेज रफ्तार अज्ञात काली स्कार्पियो ने जोरदार मार दी। हादसे में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। अचेत अवस्था मे परिजन घायल युवक को लेकर कस्बे के एक निजी अस्पताल में ले गये जहां चिकित्सक द्वारा उसे मृत घोषित कर दिया। हादसे की मृतक की मां ने थाने पर तहरीर दी है। प्रभारी निरीक्षक निर्भय नरायन सिंह ने बताया कि युवक के शव को पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजा गया है।

मिल्कीपुर उपचुनावः अखिलेश यादव ने किया वादा, 2027 में हमारी सरकार आई तो अयोध्या को वर्ल्ड क्लास सिटी बनाएंगे

संवाददाता–अयोध्या। महाकुंभ में हुई भगदड़ में मौतों की संख्या को लेकर योगी सरकार और विपक्ष के बीच वार–तकरार लगातार चल रही है। इस बीच सोमवार को अयोध्या के मिल्कीपुर पहुंचे समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर बड़ा हमला बोला।

अखिलेश ने सीएम योगी पर शवों की संख्या को लेकर झूठ बोलने का आरोप लगाया। कहा कि मृत्य सबसे बड़ा सत्य होता है। जो सत्य के रास्ते पर चले वही योगी होता है। कहा कि लोग वस्त्र से नहीं विचार से योगी होते हैं। जो सत्य के रास्ते पर चले वही योगी है और जो सत्य को छिपाए कभी योगी नहीं हो सकता है। कहा कि मृत्यु सबसे बड़ा सत्य है, यह लोग मृत्यु पर भी झूठ बोल रहे हैं। अखिलेश बोले, हम उन्हें कहना चाहते हैं कम से कम जिन लोगों की जान गई है, उनके आंकड़े सही दे दो। अगर आप सत्य के रास्ते पर चलते हैं तो आंकड़े दे दो।

अखिलेश यादव अयोध्या की मिल्कीपुर सीट पर सपा प्रत्याशी अजीत प्रसाद के लिए वोट मांगने पहुंचे थे। मिल्कीपुर सीट पर पांच फरवरी को वोटिंग होनी है। अखिलेश ने कहा कि वस्त्र पहन लेने से कोई योगी नहीं होता, बल्कि सत्य के रास्ते पर चलने पर योगी कहलाता है। कुंभ के मेले में जो घटना घटी है उसको छिपाया जा रहा है। मृतकों और घायलों के आंकड़े नहीं बताये जा रहे हैं। सरकार कह रही थी कि प्रयाग के महाकुंभ मेले में बड़े अच्छे इंतजाम हैं, तो इस तरह की घटना कैसे हो गयी।

महाकुंभ में जो घटनाएं हुई हैं, उसकी हम लोग कल्पना नहीं कर सकते हैं। जब से स्नान शुरू हुआ था, कभी इतने करोड़ तो कभी उतने करोड़ लोगों के आने की गिनती बताई जा रही है। कुंभ खत्म होगा तो कुछ और आंकड़े आएंगे। अखिलेश ने कहा कि वो करोड़ों लोगों का हिसाब किताब दे रहे हैं। लेकिन जिनकी जान गई उनकी गिनती नहीं दे पा रहे हैं। उनके आंकड़े नहीं दे पा रहे हैं। यह पहले मुख्यमंत्री हैं जो सच्चाई को स्वीकार नहीं कर रहे हैं।

अखिलेश ने कहा कि जिस तरह से घटना शुरू हुई है। अगर सरकार ने सही समय पर फैसला लियाा होता तो इतनी जान नहीं जाती। इन लोगों को गिनती बताने में 17 घंटे लग गए। इसके बाद भी बताया केवल 30 लोग मरे हैं। अखिलेश ने कहा कि यह गिनती सही नहीं है। अभी भी लोग अपनों को खोज रहे हैं। उस रात करोड़ों करोड़ लोग बिना स्नान चले गए। सरकार इंतजाम नहीं कर पाई। ऐसा पहली बार हो रहा है कि करोड़ों लोगों को बुलाया गया और स्नान का मौका नहीं मिला।

दलित युवती हत्याकांड का खुलासा, 3 आरोपी गिरफ्तार, शराब के नशे में की थी वारदात

संवाददाता–अयोध्या। दलित युवती हत्याकांड का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। एसएसपी राज करण नैय्यर ने खुलासा करते हुए बताया कि हरी राम कोरी, विजय साहू व दिग्विजय सिंह को गिरफ्तार किया गया है। तीनों ने शराब के नशे में वारदात की थी।

अयोध्या में दलित युवती की हत्या के मामले में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने हत्याकांड का खुलासा करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। एसएसपी राज करण नैय्यर ने खुलासा करते हुए बताया कि हरी राम कोरी, विजय साहू व दिग्विजय सिंह को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि युवती की हत्या तीनों आरोपियों ने शराब के नशे में की थी। गांव के ही एक स्कूल में हत्या हुई थी। हत्या कर नाले के पास शव फेंक दिया था। पुलिस तीनों आरोपियों को रिमांड पर लेगी।

आपको बता दें कि अयोध्या में शुक्रवार शाम से लापता एक युवती का नग्न अवस्था में शव मिला था। घटना कोतवाली क्षेत्र के सहनवा गांव की थी। जहां हैवानों ने दलित युवती के साथ दरिंदगी की। 30 जनवरी की रात 22 साल की युवती भागवत देखने गई थी। जहां रात करीब 11 बजे तक वह घर नहीं आई। परिजनों ने जब खोज की लेकिन उसका पता नहीं चल सका। शनिवार सुबह नाले के पास युवती का अर्धनग्न हाल में शव बरामद हुआ। वहीं, पास में खून से लथपथ कपड़े मिले। युवती की बेरहमी से हत्या की गई थी। उसका हाथ–पैर टूटा हुआ था। साथ ही आंखे भी फोड़ दी गई थीं। चेहरे पर कई जगह जख्म के निशान थे।

भाजपा के पूर्व विधायक पर अभद्र टिप्पणी का ऑडियो वायरल, मुकदमा दर्ज

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या के मिल्कीपुर उपचुनाव के प्रचार के अंतिम दौर में भाजपा के पूर्व विधायक और कद्दावर ब्राह्मण नेता इंद्र प्रताप तिवारी खब्बू पर अभद्र टिप्पणी का ऑडियो वायरल हो रहा है। इस मामले में ब्लॉक प्रमुख संघ के जिलाध्यक्ष शिवेंद्र सिंह ने समाजवादी पार्टी के अज्ञात कार्यकर्ताओं के खिलाफ फेक ऑडियो वायरल करने का मुकदमा दर्ज कराया है। मिल्कीपुर के इनायतनगर थाने में मुकदमा दर्ज हुआ है। सोशल मीडिया पर शिवेंद्र सिंह और जिला पंचायत अध्यक्ष रोली सिंह के देवर अंकुर सिंह का ऑडियो तेजी से वायरल हो रहा है। शिवेंद्र सिंह ने कहा कि ऑडियो पुराना और फेक है। उपचुनाव को प्रभावित करने के लिए सपा कार्यकर्ता ऑडियो वायरल कर रहे हैं। शिवेंद्र सिंह ने कहा कि पूर्व विधायक खब्बू तिवारी पार्टी के वरिष्ठ और कद्दावर नेता हैं।

निर्भया कांड से भी ज्यादा वीभत्स है घटना सख्त सजा दी जाए –प्रमोद तिवारी

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या में एक नाबालिग लड़की के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या के मामले में कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि यह बेहद शर्मनाक है। ये घटना दिल्ली में हुए निर्भया कांड से भी ज्यादा खौफनाक है। उन्होंने कहा कि दोषियों पर तत्काल सख्त कार्रवाई की जाए। ये सब कुछ अयोध्या में हुआ है। क्या यही रामराज्य है। दोषियों को तत्काल सजा दी जाए। मामले का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी संज्ञान लिया है। रविवार को उन्होंने परिजनों से फोन पर बात की। मुख्यमंत्री ने श्रम एवं सेवायोजन राज्य मंत्री को पीड़ित परिवार से मुलाकात करने के लिए मृतका के घर भेजा और यथासंभव हर मदद करते हुए न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया है। श्रम एवं सेवायोजन राज्य मंत्री मनोहर लाल कोरी रविवार को अयोध्या पहुंचे। यहां उन्होंने मृतका के परिवार से मुलाकात की और न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया। अयोध्या पहुंचे राज्य मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि घटना बहुत ही दर्दनाक है। जघन्य अपराध हुआ है। दुर्दांत तरीके से बिटिया की हत्या हुई है। मुख्यमंत्री ने पूरे मामले को संज्ञान में लिया और उन्होंने मुझे भेजा है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि दोषियों को नहीं बक्शा जाएगा। इस घटना को लेकर सांसद अवधेश प्रसाद के रोने पर राज्य मंत्री ने कहा कि यह लोग नाटकबाज है। मुख्यमंत्री ने पीड़ित परिवार से मुलाकात करने के लिए मुझे भेजा है। सरकार पीड़ित परिवार के साथ है।

प्रदेश अध्यक्ष बोलेः अपने रिपोर्ट कार्ड को लेकर भाजपा मिल्कीपुर की जनता के बीच में, राष्ट्रवाद जीतेगा

संवाददाता–अयोध्या। मिल्कीपुर सीट को लेकर सोमवार को प्रचार का आखिरी दिन रहा। प्रचार के आखिरी दिन भाजपा की तरफ से प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने मोर्चा संभाला। इनायत नगर के एक स्कूल में प्रेस वार्ता में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा अपने रिपोर्ट कार्ड को लेकर जनता के बीच में है और जनता समझ गई है कि वोट किसको देना है। लड़ाई परिवारवाद और राष्ट्रवाद की है। राष्ट्रवाद को लेकर भाजपा चुनाव मैदान में है और भाजपा प्रत्याशी चंद्रभानु पासवान भारी अंतर से चुनाव जीतेंगे। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष ने संगठनात्मक बैठक में भी शिरकत की। कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि भाजपा भारी अंतर से चुनाव जीतने जा रही है। सपा सांसद के फूट फूट के रोने के सवाल पर सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि पहले भी चुनाव के दौरान अवधेश प्रसाद नाटक करते आए हैं और इस चुनाव में भी नाटक कर रहे हैं लेकिन इसका असर चुनाव पर पड़ने वाला नहीं है।

बारात से वापस आ रही बस से पिकअप में टक्कर, बस ड्राइवर की मौत

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले के धनघटा थाना क्षेत्र के तामा चौराहे से आगे प्राथमिक विद्यालय के पास रविवार की देर रात धनघटा की तरफ से बारात लेकर वापस आ रही बस और पिकअप में आमने–सामने से टक्कर हो गई। जिसमें बस ड्राइवर की मौत हो गई। गनीमत रही कि बस में बैठे सभी बाराती सुरक्षित रहे। पिकप सिकरीगंज से टमाटर लाद कर धनघटा जा रही थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जनपद गोरखपुर से बेलघाट बस्ती जिले के गायघाट रविवार को बारात गई हुई थी। देर रात वहां से बस वापस बारातियों को लेकर बेलघाट घर जा रही थी। करीब 3.30 बजे रात धनघटा थाना क्षेत्र के तामा चौराहे के पास पहुंची थी। उसी समय सिकरीगंज की तरफ से एक पिकप धनघटा की तरफ जा रही थी। तामा चौराहा के पास सामने से ड्राइवर सीट की तरफ से टक्कर हो गई। दुर्घटना में बस ड्राइवर राजेंद्र विश्वकर्मा पुत्र उजागर निवासी ग्राम मड़हा थाना महुली संतकबीरनगर की मौके पर ही मौत हो गई।

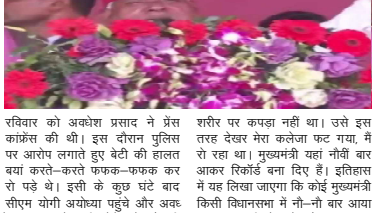

हमें कुत्ता बना दिया ! अब योगी पर बरसते हुए अखिलेश के सामने मंच पर ही रोने लगे अवधेश प्रसाद

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या के सांसद और समाजवादी पार्टी के पोस्टर ब्वाय कहे जाने वाले अवधेश प्रसाद सोमवार को एक बार फिर सार्वजनिक रूप से फूट–फूटकर रोने लगे। इस बार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर कई आरोप लगाते हुए अवधेश प्रसाद मंच पर ही अखिलेश यादव के सामने रोने लगे। अवधेश प्रसाद ने कहा कि अयोध्या की बेटी की नंगी लाश देखने के बाद उसके अपमान पर रो रहे थे तो योगी बाबा कहते हैं कि नौटंकी कर रहा है। कहते हैं कि लोकसभा चुनाव का बदला लेंगे। किस बात का बदला लेंगे। छह लाख लोगों ने मुझे वोट दिया है। किसके–किसके बदला लेंगे। वहीं, अवधेश प्रसाद के रोने को नौटंकी कहने पर अखिलेश यादव ने भी योगी पर निशाना साधा। अखिलेश ने कहा कि जो लोग घबराए होते हैं, घिसियाए होते हैं, वही लोग इसी तरह की भाषा का इस्तेमाल करते हैं। अयोध्या में एक दलित युवती की नृशंस तरीके से हुई हत्या को लेकर रविवार को अवधेश प्रसाद ने प्रेस कांफ्रेंस की थी। इस दौरान पुलिस पर आरोप लगाते हुए बेटी की हालत बयां करते–करते फफक–फफक कर रो पड़े थे। इसी के कुछ घंटे बाद सीएम योगी अयोध्या पहुंचे और अवधेश प्रसाद के इसी रोने को नौटंकी बता दिया था। सोमवार को सपा की जनसभा में अखिलेश यादव से पहले लोगों को संबोधित करते हुए अवधेश प्रसाद ने कहा कि कल योगी बाबा आए थे। मुझे क्या क्या कह गए। कहते हैं कि यहां का सांसद नौटंकी करता है। हम तो बेटी के साथ अपमान पर रो रहे थे। नंगी बेटी को देखा, शरीर पर कपड़ा नहीं था। उसे इस तरह देखकर मेरा कलेजा फट गया, मैं रो रहा था। मुख्यमंत्री यहां नौवीं बार आकर रिकॉर्ड बना दिए हैं। इतिहास में यह लिखा जाएगा कि कोई मुख्यमंत्री किसी विधानसभा में नौ–नौ बार आया था। मुख्यमंत्री ने मुझे और क्या–क्या कह दिया है। हमें कुत्ता बना दिया है। कुत्ते की पूंछ बना दिया है। यह कहते हुए अवधेश प्रसाद एक बार फिर रोने लगे। अवधेश प्रसाद ने योगी सरकार के मंत्रियों पर भी संगीन आरोप लगाए। आरोप लगाया कि मंत्री कहते हैं कि अफसोस यहां के लोगों ने एक दलित को सांसद बनाया है। इससे अयोध्या की गरिमा गिरी है। अवधेश प्रसाद ने कहा कि यह दलित समाज का अपमान किया गया है। वहीं, अखिलेश ने कहा कि जो घटना अयोध्या में हुई है, जो लोग अपनी बेटी को खोजने निकले, उन्हें अपनी बेटी की लाश मिली। लाश से पहले वस्त्र मिले। जो–जो उसके साथ हुआ, वह परिवार स्वीकार नहीं कर सकता है। अगर एक पिता उस बेटी के परिवार के दुख से दुखी होकर रोने लगता है तो कहा जा रहा है कि वो ढोंग कर रहे हैं। कहा कि यहां पर कितने लोग हैं जो जानते होंगे कि मित्रसेन भी इसी तरह से अन्याय के खिलाफ लड़ते रहे हैं। अखिलेश ने आरोप लगाया कि अगर बेटियों के साथ सबसे ज्यादा अत्याचार कहीं हो रहा है कि तो वह यूपी में हो रहा है। कहा कि गूगल कर लेना, सोशल मीडिया पर देख लेना, सब सच्चाई दिख जाएगी। अखिलेश ने कहा कि सरकार के मुख्यमंत्री केवल छिपाना जानते हैं कोई काम करना नहीं जानते हैं। अगर यह काम करना जानते तो समय पर एंबुलेंस आती।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

वाद सं0–T 201817650303338

अदालत– श्रीमान उप जिलाधिकारी (न्यायिक) महोदय मेंहदावल जिला संतकबीरनगर

श्रीमती अन्नपूर्णा आदि

बनाम

विश्वनाथ आदि

1. विश्वनाथ पुत्र राम पियारे 2. ओम प्रकाश 3. जय प्रकाश 4. चन्द्र प्रकाश पुत्रगण विश्वनाथ निवासीगण ग्राम पुरैना हाल मुकाम अठलोहिया तप्पा पटना परगना बांसी पूरब तहसील मेंहदावल जिला संतकबीरनगर 5. देवी प्रसाद 6. सच्चिदानन्द पुत्रगण दूबर 7. बुद्धिसागर पुत्र दयाराम 8. राजेश 9. ब्रम्हदेव पुत्रगण श्री भागवत 10. श्रीमती सुभावती पत्नी श्री भागवत 11. बैजनाथ पुत्र कमला निवासीगण ग्राम पुरैना तप्पा पटना परगना बांसी पूरब तहसील मेंहदावल जिला संतकबीरनगर 12. उ0प्र0 सरकार द्वारा कलेक्टर महोदय संतकबीरनगर 13. ग्राम पंचायत अठलोहिया द्वारा प्रधान ग्राम पंचायत अठलोहिया तप्पा पटना परगना बांसी पूरब तहसील मेंहदावल जिला संतकबीरनगर

तारीख पेशी 13–02–2025

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 13 माह 02 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाव दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

वाद सं0–T 202417650300718

धारा 116 उ0प्र0रा0सं0–2006

अदालत– श्रीमान उप जिलाधिकारी महोदय मेंहदावल जिला–संतकबीर नगर

घनश्याम

बनाम

राजेश आदि

बावत मौजा छपिया अगन्द तप्पा व तहसील मेंहदावल जिला संतकबीर नगर

1. राजेश कुमार 2. विजय कुमार 3. वीरेन्द्र त्रिपाठी 4. विपिन त्रिपाठी पुत्रगण परमात्मा प्रसाद 5. ज्ञानमती पत्नी परमात्मा प्रसाद 6. विन्दू देवी पत्नी प्रमात्मा प्रसाद 7. रवि देवी पत्नी परमात्मा प्रसाद 8. मनीष कुमार पुत्र संजय 9. अंकित पुत्र संजय 10. शीला पत्नी संजय 11. अजय कुमार 12. दीनानाथ पुत्रगण रामललित 13. लालमन 14. सूर्यनाथ 15. रामाज्ञा 16. रघुनाथ 17. यदुनाथ पुत्रगण राजपत साकिनान मौजा छपिया अगन्द तप्पा मेंहदावल परगना मगहर पूरब तहसील मेंहदावल जिला संतकबीर नगर –प्रतिवादीगण प्रथम वर्ग 18. ग्राम पंचायत अध्यक्ष जरिये ग्राम प्रधान छपिया अगन्द तप्पा मेंहदावल परगना मगहर पूरब तहसील मेंहदावल जिला संतकबीर नगर –प्रतिवादी द्वितीय वर्ग

तारीख पेशी 05–02–2025

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 05 माह 02 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाव दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

19,858 करोड़ का रेल बजट मिला, सभी रेल लाइनें सुरक्षा प्रणाली से होंगी लैस

संवाददाता–गोरखपुर। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोमवार को रेलवे बजट की जानकारी दी। वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए उन्होंने सभी जीएम संग वीडियो कांफ्रेंसिंग कर रेल की योजनाओं और बजट के बारे में जानकारी साझी की। बताया कि यूपी में 19,858 करोड़ रुपये का रेल बजट मिला है। आने वाले दिनों में इस बजट से यूपी की रेलवे लाइनों को सुरक्षा कवच प्रणाली से सुरक्षित किया जाएगा। इसके अलावा गोरखपुर से सभी टर्मिनल स्टेशन के लिए ट्रेनें चलाई जाएंगी। छह साल में यूपी की सभी लाइन कवच सुरक्षा प्रणाली से लैस की जाएगी। कहा, अधिक ट्रेनें चलाई जाए इसलिए गोरखपुर स्टेशन का पुनर्विकास किया जा रहा है। इसके अलावा कम दूरी के लिए नमो भारत ट्रेन चलाई जाएगी। गोरखपुर से अयोध्या के बीच में भी चल सकती है। गोरखपुर से एनईआर की जीएम सौम्या माथुर जुड़ी थीं।

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब (आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती

वाद सं0–666 / 2019

धर्मराज सिंह आदि

बनाम

रामजीत आदि

1. श्रीमती शीला सिंह पत्नी सुरेश 2. प्रशान्त सिंह पुत्र सुरेश 3. आनन्द प्रताप सिंह पुत्र वीरेन्द्र सिंह 4. अनिल सिंह पुत्र विन्देश्वरी सिंह 5. दीपक सिंह पुत्र मोहन सिंह 6. शत्रुघन सिंह पुत्र रामकरन सिंह 7. आशीष सिंह पुत्र विन्देश्वरी सिंह 8. हरिश्चन्द्र सिंह पुत्र जमादार सिंह 9. रामचेत 10. सूर्यनाथ 11. अवधेश सिंह पुत्रगण वंशराज 12. सुरेन्द्र सिंह पुत्र लाल बहादुर सिंह निवासीगण मौजा महेवाकुँवर तप्पा पुरैना परगना अमोढ़ा तहसील हरैया जिला–बस्ती

तारीख पेशी 02–04–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 02 माह 04 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाव दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

कर्ज दुनिया का सबसे गुनहगार शब्द है, लिखकर कोचिंग मैनेजर ने की आत्महत्या

संवाददाता–गोरखपुर। कर्ज दुनिया का सबसे गुनहगार शब्द है, मैं अपनी पत्नी और बच्चों का भी गुनाहगार हूं, मुझे माफ करना... मैं अपनी मर्जी से जान दे रहा हूं, इसमें किसी को जिम्मेदार न माना जाए। यह लाइनें लिखकर कोचिंग के मैनेजर ने सोमवार की सुबह कोचिंग के स्टोर रूम में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली।

शाहपुर में स्टार ट्यूटोरियल कोचिंग के स्टोर रूम में रामगढ़ ताल इलाके के इंद्रा नगर निवासी विशाल सिंह (52) ने फांसी लगाकर की आत्महत्या कर ली। मौके पर पहुंचकर पुलिस छानबीन कर रही है। मृतक के पास से मिले सुसाइड नोट की भी पुलिस जांच कर रही है।

मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास को ब्रेन स्ट्रोक, हालत गंभीर

संवाददाता–अयोध्या। रामलला के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास (87) को ब्रेन स्ट्रोक के बाद लखनऊ के पीजीआई में भर्ती कराया गया है। उनकी हालत अभी भी नाजुक बनी हुई है। रविवार की देर रात मुख्य पुजारी की तबियत बिगड़ने पर उन्हें दर्शननगर मेडिकल कालेज में भर्ती कराया गया था। जहां से लखनऊ के लिए रेफर कर दिया गया है। उन्हें प्राइवेट अस्पताल हर्षण संस्थान ले जाया गया, हालत में सुधार न होने पर पीजीआई में भर्ती कराया गया। पीजीआई की तरफ से जारी हेल्थ बुलेटिन के मुताबिक उनकी हालत बहुत गंभीर है। मौजूदा समय में उन्हें न्यूरोलॉजी वार्ड एचडीयू में भर्ती किया गया हैं और विशेषज्ञ डॉक्टरों की निगरानी में इलाज चल रहा है। वह मधुमेह और उच्च रक्तचाप से ग्रस्त हैं। उनकी हालत गंभीर है। वे फिलहाल स्थिर हैं और। आचार्य सत्येंद्र दास एक मार्च 1992 से रामलला की सेवा में हैं। वे बाबरी विध्वंस से लेकर मंदिर निर्माण तक की यात्रा के साक्षी भी हैं। टेंट से लेकर भव्य महल में रामलला की सेवा करने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ है। उनके शिष्य व राम मंदिर के सहायक पुजारी प्रदीप दास ने बताया कि राम जन्मभूमि परिसर में पूजा–अर्चना करने वाले आचार्य सत्येंद्र दास की तबियत बिगड़ने से मंदिर प्रशासन और उनके भक्तों में चिंता का माहौल है। सभी उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना कर रहे हैं।

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब (आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

मूलवाद सं0–227 / 2022

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (सी0डि0) एफ0टी0सी0 महोदय बस्ती जिला–बस्ती

पंजाब नेशनल बैंक

बनाम

कैलाशनाथ आदि

1. कैलाशनाथ उम्र लगभग 40 वर्ष पुत्र श्री रामदुलारे 2. श्री रामदुलारे उम्र लगभग 63 वर्ष पुत्र भागीरथी निवासीगण ग्राम कोठारा पोस्ट पुरविया तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला बस्ती

तारीख पेशी 20–02–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 20 माह 02 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाव दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब (आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

मो0 दुर्घटना प्रतिकर वाद सं0–166 / 2022

न्यायालय–श्रीमान मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण महोदय बस्ती जिला–बस्ती

रामवृक्ष आदि

बनाम

मधुमाला कुमारी आदि

1. मधुमाला कुमारी पत्नी हीरा कुमार निवासी न्यू विजय नगर फ्रन्ड्स कालोनी इटावा, उ0प्र0 पिनकोड 206001 (पंजीकृत वाहन स्वामी दुर्घटनाग्रस्त वाहन सं0–(U.P.75BT-3071)

तारीख पेशी 04–02–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 04 माह 02 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाव दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब (आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

मो0 दुर्घटना प्रतिकर वाद सं0–167 / 2022

न्यायालय–श्रीमान मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण महोदय बस्ती जिला–बस्ती

रामदीन आदि

बनाम

मधुमाला कुमारी आदि

1. मधुमाला कुमारी पत्नी हीरा कुमार निवासी न्यू विजय नगर फ्रन्ड्स कालोनी इटावा, उ0प्र0 पिनकोड 206001 (पंजीकृत वाहन स्वामी दुर्घटनाग्रस्त वाहन सं0–(U.P.75BT-3071)

तारीख पेशी 04–02–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 04 माह 02 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाव दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाव ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुदित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय– चतुर्मुखी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय– आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय– इलाहीबाग गोरखपुर।

मो09450567450 9336715406,

ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com bhartiyabasti@gmail.com